**सम्पादकीय** 2
पर्व-त्यौहारों की यह वेला धर्म धारणा को परिष्कृत और सुदृढ़ करने का अवसर है

वर्षा ऋतु के आरंभ से ही चल पड़ा वृक्षारोपण का सशक्त अभियान 5

छत्तीसगढ़ में 13 जिलों के 27 स्थानों में सम्पन्न हुए व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर 6

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का वियतनाम, सिंगापुर और जापान प्रवास 7

हिराशिमा में विश्व सम्मेलन एआई एथिक्स फॉर पीस **शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने भारत और हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व किया** 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

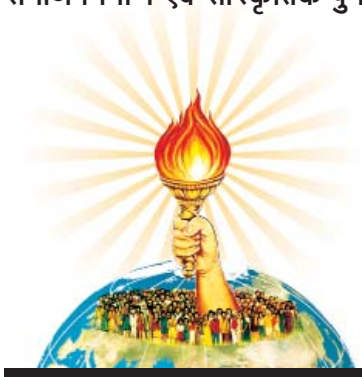

पाक्षिक

# प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 अगस्त 2024

वर्ष : 37, अंक : 03
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 जुलाई 2024
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26


**।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।**

**उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।**

विपत्ति एक परीक्षा है। परीक्षा का उद्देश्य मनुष्य को मजबूत करना होता है। दंगल में उस्ताद अपने नये पहलवानों को खूब पटकनी देता है। वह बार-बार गिराता है, हाथ-पावों की कसरतें कराकर अपने शिष्य को आने वाली हर मुसीबत के लिए मजबूत बना देता है। इसी प्रकार विपत्ति हमें दो-चार पटकनी देकर मजबूत बनाने आती है। एक विपत्ति को सहन कर हम आने वाली उससे भी बड़ी मुसीबत को परास्त करने की ताकत प्राप्त कर लेते हैं। उत्तरोत्तर विपत्तियों को सहन करते-करते हम भावी जीवन के लिए हर प्रकार सुदृढ़ बन जाते हैं।

## हारिये न हिम्मत

विपत्तियाँ जीवन के साथ अभिन्न रूप से जुड़ी रहती हैं। यह हम पर निर्भर है कि उनसे भयभीत होकर स्वयं को कमजोर बनाते चले जायें या साहस और समझदारी के साथ उनका सामना करते हुए स्वयं को अधिक मजबूत बनाते जायें। विपत्तियों से घबराइये मत, उन्हें यों मात दीजिए।

**समझदारी और हिम्मत दिखाइये**

जिस विपत्ति से नहीं बचा जा सकता, उसे सहन करने की ताकत इकट्ठी कीजिए। उसे ग्रहण करने के योग्य शरीर और मन को बनाइये। समय को अवसर दीजिए कि वह आपको आने वाली नयी परिस्थिति से युद्ध करने योग्य बना दे।

आप जिस बात से किसी प्रकार नहीं बच सकते, उसके विषय में चिन्ता करने से भला, आपको क्या लाभ होने वाला है ? चिंता से तो आप अपनी कार्यशक्तियों को पंगुमात्र बनाकर ही रहेंगे। मृत्यु, हानि, विछोह, परीक्षा में फेल होना या और भी ऐसी परिस्थितियाँ जो अपरिहार्य हैं, उनके साथ मानसिक सामंजस्य स्थापित कर लीजिए।

समय में बड़ी ताकत है। वह बड़े से बड़े मानसिक घाव, भयंकर हानियाँ, दुःख और तकलीफें कम कर देता है। अतः जो अपरिहार्य है, उसे समझदारी और साहस के साथ स्वीकार कीजिये और समय को मौका दीजिए। आप विपत्ति को जरूर पराजित कर सकेंगे। संकट की घड़ी बीत जाने पर हिम्मत और अनुकूलता स्वयं आने लगती है। व्यग्र होने से कोई लाभ नहीं है।

**हताशा में समय न गँवायें**

कष्ट आने पर अपनी विवेक बुद्धि द्वारा उसे परास्त करने की कोई युक्ति सोचिए। यदि आपका कोई इष्ट मित्र या सच्चा स्नेही हो तो उससे सलाह लेकर उसके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही कीजिए। उससे कम से कम हानि किस प्रकार हो, यह विचारिये। सच मानिये आप जरूर कोई न कोई समाधान खोज निकालेंगे। जो व्यक्ति कार्यवाही में तेजी और सतर्कता दिखाता है, वह अवश्य सफल होता है, कष्ट की घड़ी टल जाती है।

**मन को परोपकार पर एकाग्र कीजिए**

जीवन बहुत लम्बा है। समय का क्षण-क्षण बहुमूल्य है। न जाने कब किस रूप में आपका भाग्य चमक उठे, अच्छे दिन आ जायें। प्रत्येक दिन नयी-नयी सम्भावनाओं से भरा पड़ा है। इसलिए निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

जीवन की सार्थकता इसी में है कि समय का अधिक से अधिक उपयोग संसार के उपकार के लिए किया जाए। दूसरों की सेवा में मनुष्य अपना दुःख दर्द भूल जाता है। अतः दूसरों की सहायता करने पर मन को एकाग्र कीजिए।

**आप अभावग्रस्त नहीं हैं**

आपको अच्छा स्वास्थ्य, प्यार करने वाला परिवार, सेवाभावी पत्नी, बन्धु-बान्धव, मकान, वस्त्र, व्यापार, यश, प्रतिष्ठा, यौवन, कीर्ति न जाने कितनी मंगलकारी वस्तुएँ प्राप्त हैं। असंख्य वस्तुएँ ऐसी हैं, जो दूसरों के पास नहीं हैं। आप इन्हें गिनें और उन लोगों के जीवन की कल्पना करें, जिनके पास ये मंगलकारी वस्तुएँ नहीं हैं। फिर सोचिए कि विपत्ति के लिए शोक करना कितना व्यर्थ है।

## भगवान राम से प्रेरणा लीजिए

भगवान राम का यह जीवन प्रसंग आपकी निराशा को नव-प्रेरणा दे सकता है।

अपहृता सीता के कारण विरह कातर राम एक दिन अत्यन्त निराश और दुःखी थे। कोई मजबूत सहारा नहीं दीख रहा था। चारों ओर जैसे अन्धकार ही अन्धकार था। उन्हें उन दिनों सुग्रीव का एक सहारा मिला था, लेकिन वह भी निरपेक्ष था।

श्री राम को अपने असहाय एकाकीपन पर बेहद आत्मग्लानि हुई। संसार में उन्हें कुछ भी आश्रय नहीं दीख रहा था। उन्हें प्रतीत हो रहा था जैसे सारा संसार ही खाली-खाली हो। परदेश में उस संकटकालीन परिस्थिति में वे लक्ष्मण को सम्बोधित कर बोले :-

"लक्ष्मण! सब दुर्दशा करके भी दुष्ट दैव न जाने मुझे अभी कितना कष्ट और देगा। संकटों को झेलते-झेलते मैं जैसे थक गया हूँ। मेरा साहस जवाब दे रहा है। घर छूटा, सगे सम्बन्धी छूटे, पतिव्रता सहधर्मिणी छूटी। सब ओर दुःख ही दुःख है। वन का संकटापन्न जीवन भी विधि को सह्य नहीं हुआ। उफ! कैसी विवशता है ? हमारे वंश में आज तक मेरे जैसा दुःखभागी आदमी उत्पन्न नहीं हुआ है। लक्ष्मण! बताओ, अब क्या करूँ ? मेरे तो हाथ-पाँव नहीं चलते।"

भगवान ने आगे कहा :-

**न वित्तं न बलं वीर त्वमेकः सहचारकः।**
**न चात्र तरणोपायो ह्यसहायस्य में किल॥**

"लक्ष्मण! मेरे पास धन (अर्थात् आर्थिक बल) नहीं है। मेरे पास शारीरिक शक्ति भी नहीं है। इस दुःख सागर से पार उतरने का तुम्हारे अतिरिक्त और कोई आश्रय नहीं है। मैं तो एकदम असहाय और निराश हो गया हूँ। जानकी को यदि कुछ हो गया, तो मैं जीवन से ऊबकर प्राण त्याग दूँगा।"

लक्ष्मण महापराक्रमी भगवान की ऐसी निराशामयी वाणी सुनकर चकित रह गये। क्या भगवान श्री राम जैसे शक्ति सम्पन्न व्यक्ति को निराश, निरुपाय होना चाहिए ? कदापि नहीं।

निराश श्रीराम को ऐसा निस्तेज और निरुत्साह देखकर लक्ष्मण ने कहा, "भगवन! क्या आपको अपने लक्ष्मण जैसे वीर भाई के बाहुबल पर भरोसा नहीं है ? इसके अतिरिक्त हमारे पास भाई भरत, राजा जनक एवं सुग्रीव आदि के सैन्य बल का भरोसा है। हम सब आपके साथ हैं, जीवन के हर पग पर सहायता करने वाले हैं।

## शक्ति की उपासना करो

लक्ष्मण के समझाने-बुझाने पर भी मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम आश्वस्त न हुए। इतने में महर्षि नारद वहाँ आ पहुँचे और राम को निराश हुआ देखकर बोले, "राम! जीवन में निराश होने से कैसे काम चलेगा ? हृदय में उत्तरोत्तर बढ़ते अदम्य उत्साह को लेकर ही मनुष्य अपने जीवन की विविध कठिनाइयों को पार करता है। वन में आकर आप अपनी संकल्प शक्ति खो बैठे हैं, तभी आप कातर और कायर बने हुए हैं। आप नौ दिन का व्रत लेकर शक्ति की उपासना कीजिए। शक्ति की आराधना आपको रावण-विजय के लिए काफी ताकत दे देगी। पूर्वकाल में जब-जब संकट आया, तब-तब ब्रह्मा, विष्णु और महेश तक ने शक्ति (महिमावती दुर्गा) की आराधना करके बल पाया है।

वह शक्ति नित्य, सनातन, सर्वादि कारण और सर्व कामप्रदा दुःखनाशिनी है। उसके बिना कोई पलक भी नहीं मार सकता। विष्णु की पालन शक्ति ब्रह्मा की सृजन शक्ति, रुद्र की प्रलय शक्ति का आधार वही (दुर्गा) शक्ति है। प्रलय काल में निर्गुण होकर वह परब्रह्म में लीन रहती है और सृष्टिकाल में सगुण, सक्रिय होकर विश्व का संचालन करती है। अतः शक्ति की उपासना से नवजीवन प्राप्त कीजिए।

राम ने नौ दिनों के व्रत-उपवास से शरीर और आत्मा को शुद्ध किया। माँ की महती शक्ति का उनमें प्रादुर्भाव हुआ। इसी के आधार पर उनकी निराशा, निरुत्साह और दुःख कम हुआ। उनका शरीर और आत्मा ओजस्वी बने और उन्हें पूर्ण विजय प्राप्त हुई।

शक्ति की आराधना का प्रभाव यह होता है कि उससे मनुष्य की कष्टनिरोधिनी ताकत बढ़ती है। निर्बलता और हीनता की भावना हटकर साहस का प्रादुर्भाव होता है।

## सद्ज्ञान का प्रकाश

कहा गया है- **ज्ञानतृप्तो न शोचति**। (महाभारत, शा. 337/24) अर्थात्-"ज्ञान से तृप्त विचारशील व्यक्ति व्यर्थ ही निराश नहीं होता, न शोक ही करता है।"

सबसे बड़ी भूल वे लोग करते हैं, जो सच्चिदानन्द आनन्दकन्द ईश्वर को सर्वव्यापक मानते हुए भी संसार में दुःख और पाप का साम्राज्य मानते हैं।

कड़ी चोटें लगने दीजिए। कड़ी चोटें खा-खाकर लोहा मजबूत बनता है, कमजोर शक्तिशाली बनता है। कड़ी चोटें जीवन का सच्चा पाठ पढ़ाती हैं और परिस्थितियों पर विजय पाने का ज्ञान देती हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम पर बचपन से ही चोटें पड़ीं, अनगिनत चोटें, वनवास की असंख्य असुविधाएँ, राक्षसों की परेशानियाँ, सीताजी का अपहरण, रावण से युद्ध इत्यादि, किन्तु उन चोटों के बाद राम फौलाद ही बन गये। उनकी समस्त कमजोरियाँ शक्ति में बदलती गईं। टक्करों का स्वागत कीजिए और उनके विरुद्ध संगठित होकर कदम उठाइये।

*वाङ्मय खण्ड 21 (अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवीय व्यक्तित्व), पृष्ठ 12.27-30 से संकलित, सम्पादित*

# धर्मो रक्षति रक्षितः

**जो धर्म की रक्षा करता है, उसकी अपनी रक्षा होती है।
जो धर्म को हराने का प्रयास करता है, वह स्वयं हार जाता है।**

## पर्व-त्यौहारों की यह वेला धर्म धारणा को परिष्कृत और सुदृढ़ करने का अवसर है

देवशयनी एकादशी से देवोत्थान एकादशी तक के दिन व्रत-त्यौहारों की बहुलता वाले दिन हैं। वर्षाकाल के इन दिनों में जब आवागमन असुविधाजनक हो जाया करता था, कृषिकार्य आदि में कमी आ जाया करती थी, ऐसे समय में हमारे ऋषियों ने लोगों को व्यक्तिगत और सामाजिक उत्थान की दिशा में प्रेरित और नियोजित करने के लिए अनेक व्रत-त्यौहारों का विधि-विधान प्रचलित किया था। आज भी उन परम्पराओं का पालन पूरी श्रद्धा-निष्ठा के साथ हो रहा है। वस्तुतः यह अपनी धार्मिक आस्थाओं को सुदृढ़ करने का विशेष अवसर है।

जीवन में धर्म परम आवश्यक है। युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने 'प्रज्ञोपनिषद्' की रचना की है। वर्तमान युग की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने के लिए रचे गए इस ग्रंथ के दूसरे मंडल के दूसरे अध्याय में ऋषि आश्वलायन-मौद्गल्य संवाद के माध्यम से पूज्य गुरुदेव लिखते हैं-

*धर्म ही एक मात्र अवलम्बन है, जिसका आश्रय लेकर मनुष्य सुख-शान्ति पाते, सुरक्षित रहते, आगे बढ़ते और श्रेय पाते हैं।*

विडम्बना यह है कि लोक प्रचलन में धर्म के प्रति अनेक विकृत मान्यताएँ दिखाई देती हैं। देखा-देखी यही मान्यताएँ जनमानस में पुष्ट होती जा रही हैं। व्यक्तिगत जीवन में धर्म के वास्तविक प्रयोजन से अनजान रहकर लोग पूजा-पाठ के सहारे ईश्वर की मनुहार करते दिखाई देते हैं। ऐसा भी देखा जाता है कि लोग अपने आचरण और व्यवहार में सुधार करने की अपेक्षा भगवान का भजन-पूजन कर अनीति के मार्ग पर चलते हुए भी परमात्मा के दण्ड के विधान से बचे रहने की अपेक्षा करते हैं। कम मेहनत में अधिक लाभ प्राप्त कर सकें, ऐसी मनोकामनाएँ ईश्वर से करते हैं।

सामाजिक जीवन में भी धर्म के वास्तविक अर्थ और प्रयोजन को भुला दिया गया है और विभिन्न पंथ-सम्प्रदायों को ही धर्म मान लिया गया है। पंथ-सम्प्रदायों का उद्भव तत्कालीन धार्मिक मान्यताओं में आई विकृतियों को दूर करने और सामयिक आवश्यकताओं को पूरा करने, समस्याओं का समाधान करने के लिए ही हुआ करता है। सभी पंथ-संप्रदाय मानव को सन्मार्ग की ओर प्रेरित कर एक ही परम सत्य अपनाने की शिक्षा देते हैं, लेकिन समय के साथ उनमें भी विकृतियाँ पनपती हैं, अनगढ़ आस्थाएँ सुदृढ़ होती है और मूढ़ मान्यताएँ परम्परा का रूप लेती जाती हैं। लोग धर्म की आत्मा को भूलकर उसके कलेवर को, प्रचलित परम्पराओं को ही सब कुछ मान बैठे हैं। इस जड़ता ने मानवता का भला नहीं किया, बल्कि समस्याएँ ही खड़ी की हैं।

### धर्म का व्यापक स्वरूप

परम पूज्य गुरुदेव ने प्रज्ञोपनिषद् में स्पष्ट लिखा है। ऋषि आश्वलायन कहते हैं-

*धर्म एक ही है। वह सब मनुष्यों के लिए एक जैसा है। उसे व्यक्तिगत कर्त्तव्य और सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह समझा जाना चाहिए। दिव्य दृष्टि सम्पन्न ऋषिगण चिन्तन की उत्कृष्टता, चरित्र की आदर्शवादिता और व्यवहार की शालीनता के समन्वय को धर्म कहते हैं। (प्रज्ञोपनिषद् 2/2/17-19)*

हमें यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि धर्म का सम्बन्ध केवल मानव से नहीं है। सृष्टि का हर घटक धर्म का पालन करता है। परम पूज्य गुरुदेव ने एक पुस्तक लिखी है- **"धर्मरक्षा से ही आत्मरक्षा होगी"**। इस पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर ही वे लिखते हैं-

धर्म उस सर्वव्यापक परमात्मा का श्रेष्ठ विधान है। वही सम्पूर्ण जगत को धारण करने वाला है। उसी के सहारे पृथ्वी और आकाश टिके हुए हैं। समुद्र अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता, यह उसका धर्म है। जलवृष्टि करना मेघ का धर्म है। दग्ध करना अग्नि का धर्म है। इस प्रकार सब अपने-अपने धर्म पर अटल हैं।''

स्पष्ट है कि धर्म कोरा कर्मकाण्ड नहीं है, यह जीवन-आदर्शों को धारण करने का विधान है। परम पूज्य गुरुदेव ने लिखा है-

''धर्म व्यक्तिगत जीवन के उत्कर्ष के साथ-साथ सामाजिक जीवन की भी विधि-व्यवस्था का इस प्रकार निर्णय करता है कि सभी को जीने, विकसित होने का समान अधिकार मिले। धर्म एक आचारशास्त्र और पथप्रदर्शक है, जिसके द्वारा वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में सुख-शान्ति, आनंद, प्रगति की साधना निर्बाध रूप से की जा सके, बिना किसी को हानि पहुँचाए।''

महापुरुषों ने धर्म की बड़ी सीधी-सरल परिभाषाएँ की हैं। एक युवक ने स्वामी विवेकानन्द से प्रश्न किया, "धर्म क्या है ?"

स्वामी जी ने बड़ा सरल-सा उत्तर दिया, "जो अपने को अच्छा लगे, वह धर्म है।"

युवक ने उनसे पूछा, "चोर को चोरी करना अच्छा लगता है, तो क्या वह भी धर्म है ?" स्वामी जी बोले, "उसे अपने घर में चोरी हो जाए, फिर भी अच्छा लगे तो फिर वह उसके लिए धर्म है।"

इस दृष्टि से तो बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि श्रेष्ठता को जीवन में धारण करने का नाम धर्म है। अपने चिंतन, चरित्र और व्यवहार में चोरी, मुनाफाखोरी, परउत्पीड़न, हिंसा जैसी अवांछनीयताओं को प्रवेश नहीं करने देना धर्म है। लोभ, मोह, अहंकार जैसे अवगुणों से बचे रहना धर्म है। जितने भी धार्मिक नियम, साधन, अनुष्ठान बताये गये हैं, उनके माध्यम से जीवन में उत्कृष्टता को धारण करना धर्म है।

अगर हम परम पूज्य गुरुदेव के शब्दों में धर्म को समझना चाहते हैं तो उनका एक सरल-सा सूत्र सदैव याद रखना चाहिए, **"दूसरों के साथ वह व्यवहार न करो, जो तुम्हें अपने लिए पसंद नहीं।"**

धर्म का श्रेष्ठ स्वरूप वह है, जिसमें मनुष्य सबके कल्याण के लिए अपने को घुलाता है। दूसरों को सुखी देखने के लिए जो अपने थोड़े से सुखों का भी परित्याग कर देता है, सबकी रक्षा के लिए जो अपने प्राण हवन कर देता है, वह सच्चा धर्मनिष्ठ कहलाने का अधिकारी है।

धर्म एक आध्यात्मिक तत्त्व है, वह निर्मल है, पवित्र है और जिस मनुष्य के पास रहता है, उसे ही निर्मल अंतःकरण वाला बना देता है।

### हमारी गौरवशाली परंपरा

भारत सदैव धर्म के मार्ग पर चला है। जहाँ धर्म है, वहीं नीति का, सदाचार का, श्रेष्ठता का निवास है। हमारी देव संस्कृति ने इसी नीति, सदाचार और श्रेष्ठता का निर्वाह किया है। हमारी संस्कृति सदैव मानवमात्र की, जीवमात्र की और विश्व वसुधा की भलाई के लिए प्रेरित करती रही है।

सुप्रसिद्ध शायर इकबाल की निम्न पंक्तियों को अक्सर उद्धरित किया जाता है-

**यूनान मिश्र रोमा सब मिट गए जहाँ से,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।**

हमारी हस्ती न मिटने का एक सबसे बड़ा कारण हमारी धर्मनिष्ठा भी है। हमने सदैव **"जियो और जीने दो।"** के सिद्धांत को अपनाया है। भारत में हिन्दू, जैन, सिख, बौद्ध सभी पंथों ने सारे विश्व को करुणा का पाठ पढ़ाया है।

### धर्मो रक्षति रक्षितः

हमने धर्म की रक्षा की है, इसीलिए हमारी हस्ती मिटी नहीं है। महाभारत का एक सुप्रसिद्ध श्लोक है।

**धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोवधीत्।।**

**(महाभारत वन पर्व 313.128)**

**अर्थात्-मारा हुआ धर्म ही हमेशा मारता है, हम से रक्षा किया हुआ धर्म ही हमारी रक्षा करता है, इसलिए धर्म का हनन नहीं करना चाहिए, जिससे तिरस्कृत धर्म हमारा विनाश न करे।**

*धर्म से आत्मा बलिष्ठ होती है, समस्त संसार प्यार करता है, ईश्वर का अजस्र अनुग्रह उपलब्ध होता है। जिसने धर्म को छोड़ दिया, उसे सब छोड़ देते हैं। जो धर्म को अपनाता है, उसे सब अपनाते हैं, जो धर्म की रक्षा करता है, उसकी अपनी रक्षा होती है। जो धर्म को हराने का प्रयास करता है, वह स्वयं हार जाता है।*

*(प्रज्ञोपनिषद् 2/2/8-11)*

धर्म की रक्षा का सीधा-सा अर्थ नीति, नियम का पालन करना, सत्य-विवेक की राह पर चलना। परम पूज्य गुरुदेव ने धर्म के पंचशील और **दस लक्षण** बताये हैं, इन्हें जीवन में धारण करना। दस लक्षण के पाँच युग्म हैं-सत्य-विवेक, संयम - कर्त्तव्य पालन, अनुशासन-व्रतधारण, स्नेह सौजन्य-पराक्रम, सहकार-परमार्थ।

**पंचशील** : 1. मौलिक अधिकारों की माँग उभरे, 2. मानवीय गरिमा के प्रति आस्था बढ़े, 3.संपर्क क्षेत्र में देशभक्ति का विस्तार हो, 4.न्याय निष्ठा को क्षति न पहुँचे और 5. आत्मोत्कर्ष की चाह के साथ ईश्वर के प्रति आस्था बढ़ती रहे।

### हमारे सामाजिक उत्तरदायित्व

व्यक्तिगत जीवन में न्यायनिष्ठा, ईमानदारी, परोपकार जैसी भावनाओं के समावेश की तरह मनुष्य की सामाजिक जिम्मेदारियाँ भी हैं, जो ऊपर दिये धर्म के दस लक्षण और पंचशीलों से भी स्पष्ट होती हैं। धर्म जहाँ व्यक्तिगत जीवन में उत्कर्ष की प्रेरणा देता है, वहीं पारिवारिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वाह का भी पाठ पढ़ाता है।

शहीद भगत सिंह आक्रांता होते तो असेंबली में बम फैंक कर भाग खड़े होते, लेकिन उन्होंने देश और धर्म की रक्षा के लिए स्वयं को बलिदान कर दिया।

गुरु गोविंद सिंह के छोटे-छोटे साहबजादों-जोरावर सिंह और फतेह सिंह ने धर्म की रक्षा के लिए स्वयं को दीवार में चिनवा लिया था।

महात्मा गाँधी अहिंसावादी थे, लेकिन राष्ट्र रक्षा के लिए उन्होंने फिरंगियों का हर जुल्म सहा पर पीछे नहीं हटे।

परम पूज्य गुरुदेव ने दादा गुरुदेव के निर्देशों का पालन करते हुए प्रतिदिन छः घंटे जप, तप के साथ साधना महापुरश्चरण सम्पन्न किए, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी सैनिक की भूमिका भी निभाई।

### आज की भ्रामक अवधारणाएँ

आज पूरे विश्व में साम्राज्यवाद का बोलबाला है। धर्म के नाम पर न जाने कितने विग्रह हो रहे हैं, अनेक देश बरबाद हो रहे हैं। युद्धों में जितना धन खर्च किया जा रहा है, उतना यदि मानवता की भलाई के लिए खर्च किया गया होता हो हर व्यक्ति इसी जीवन में स्वर्ग जैसे सुख की अनुभूति कर रहा होता। यह धर्म नहीं, अधर्म है, उन्माद है।

इन दिनों राजनीतिक लाभ के लिए या अन्य स्वार्थवादी सोच के वशीभूत होकर मानवीय आस्थाओं पर कुठाराघात किया जा रहा है। श्रेष्ठ सनातन परम्पराओं के प्रति द्वेष पनपाया जा रहा है। न केवल भारत, बल्कि मानवता की भलाई के लिए इन सबसे देश, धर्म, समाज की रक्षा करनी होगी।

पहले ही कहा गया है कि जो धर्म का आश्रय लेते हैं, वे सुख-शान्ति पाते, सुरक्षित रहते, आगे बढ़ते और श्रेय पाते हैं। आज धर्म के नाम पर उन्माद फैलाकर चाहे सारे विश्व पर अपना झंडा क्यों न गाड़ दिया जाए, लेकिन सुख-चैन नहीं मिलेगा। अधर्म के मार्ग पर चलते हुए कुबेर जैसा खजाना क्यों न प्राप्त कर लिया जाए, जीवन चिंता, भय, असंतोष से ही भरा रहेगा। रावण को सोने की लंका पाकर भी सुख-शान्ति कहाँ मिल पाई थी!

दूसरी ओर विवेकानन्द, शंकराचार्य, भगत सिंह जैसे अनेक लोग धर्म के मार्ग पर चलकर महापुरुष बनते गए। उनका जीवन भले ही छोटा हो, लेकिन इतिहास में नाम अमर कर गए। आज ऐसे ही धर्मात्माओं के जीवन पथ का अनुसरण करने की आवश्यकता है।

### प्रगतिशील पथ पर बढ़ते चलें

अगले दिनों राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस से लेकर रक्षाबंधन, ऋषि पंचमी, नवरात्र, विजयादशमी, दीपावली जैसे पर्वों पर ऐसे ही दिव्य संकल्पों को पोषित करने की आवश्यकता है। हम दैनिक जीवन में और सार्वजनिक पर्वों पर भजन, पूजन, पाठ, सत्संग, कथा, व्रत, उपवास, अनुष्ठान जैसे कोई भी साधन अपनाएँ, हमारा लक्ष्य अपने जीवन को धर्म के सच्चे मार्ग पर अग्रसर करना ही होना चाहिए।

एक चुनौती धर्मतंत्र को अविरल, निर्मल बनाए रखने की भी है। जहाँ धर्म पर्वत की तरह अटल सत्य है, वहीं इससे जुड़ी परंपराओं को बहती नदियों की तरह प्रवाहित, परिष्कृत होते रहना चाहिए। देश, काल, समय के अनुसार परिस्थितियाँ बदलती हैं, उसके अनुरूप सामाजिक प्रचलनों की उपयोगिता की समीक्षा होनी चाहिए। अंधानुकरण से विकार पनपते हैं। परंपराओं की लकीर पीटते रहने की बजाय विवेकपूर्वक अनगढ़ परंपराओं से मुक्ति पाने और प्रगतिशील परंपराओं को अपनाने की भी आवश्यकता है, ताकि धर्म धारणा का वास्तविक उद्देश्य प्राप्त हो सके।

# वर्षा ऋतु के आरंभ से ही चल पड़ा वृक्षारोपण का सशक्त अभियान

## 5000 पौधे तैयार कर रहे हैं श्रीराम गुरुकुल के विद्यार्थी

**बुरहानपुर। मध्य प्रदेश**

अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा संचालित श्रीराम गुरुकुल बुरहानपुर में कक्षा 1 से 10 तक के विद्यार्थियों द्वारा इस वर्ष माताजी की बाड़ी में 5000 से अधिक पौधे तैयार किए जा रहे हैं, जो वर्षा काल में रोपे जाएँगे।

उल्लेखनीय है कि यह विद्यालय पूरी तरह से युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित है। हर वर्ष विद्यालय के शताधिक नए विद्यार्थी शान्तिकुञ्ज में एक मासीय युगशिल्पी सत्र में भाग लेते हैं और राष्ट्र निर्माण की विविध धाराओं में निपुण होकर अपने क्षेत्र में सक्रिय होते हैं। विद्यालय द्वारा हर वर्ष गायत्री परिवार के वृक्षगंगा अभियान के अंतर्गत न्यूनतम 5000 पौधे तैयार किए जाते हैं और विभिन्न स्थानों में रोपे जाते हैं।

### पलाश के 4000 बीज रोपे

बुरहानपुर शाखा द्वारा विगत वर्षों में माँ इच्छा देवी की पहाड़ी पर 5000 पौधे लगाए गए थे, जो आज वृक्ष बनकर सुविकसित हो रहे हैं। इस वर्ष वर्षा से पूर्व शाखा ने सामूहिक वृक्षारोपण अभियान चलाकर इसी पहाड़ी पर पलाश के 4000 बीज रोपे हैं।

श्रीराम गुरुकुल, बुरहानपुर में पौध तैयार करते विद्यार्थी तथा इच्छा देवी की पहाड़ी पर पलाश के बीजों का रोपण

## पहाड़ी के शिखर पर बना मातृशताब्दी स्मृति उपवन

**देवास। मध्य प्रदेश**

गायत्री परिवार देवास की टीम ने शंकरगढ़ की पहाड़ी पर बड़ी श्रद्धा और विधि-विधान के साथ 151 फलदार, छायादार और औषधीय उपयोग वाले पौधे लगाए। देवास शाखा के मीडिया प्रभारी श्री विक्रम सिंह चौधरी ने बताया कि इस वृक्षारोपण में गायत्री परिवार के श्री राजेंद्र पोरवाल, मुख्य प्रबंध ट्रस्टी ने अपनी माता जी की प्रथम पुण्यतिथि पर उनकी स्मृति में विशेष सहयोग दिया है। इसके अंतर्गत शीशम, कटहल, जामुन, आम, बरगद, शमी, करंज जैसे 151 पौधों का रोपण किया गया है।

युवा प्रकोष्ठ जिला समन्वयक श्री प्रमोद निहाले ने सभी लोगों से वर्तमान वर्षा ऋतु में अधिक से अधिक पौधे लगाने का आह्वान किया। उन्होंने शास्त्रों का उल्लेख करते हुए बताया कि जिस व्यक्ति ने अपने जीवन काल में एक भी पौधा नहीं लगाया, उसे अपने अंतिम संस्कार में लकड़ी का उपयोग करने का नैतिक अधिकार नहीं है।

### फलदार, छायादार, औषधीय उपयोग वाले 151 पौधे लगाए गए

वृक्षारोपण अभियान में बड़ी संख्या में गायत्री परिवार के बच्चे, बुजुर्ग, महिलाएँ सभी शामिल हुए। पंचतत्त्व फाउंडेशन की टीम, सैयद सादिक अलिक, नेहरू युवा केंद्र के कार्यकर्त्ता, ग्रीन आर्मी के सदस्यों की भी प्रशंसनीय सहभागिता रही।

## परम वंदनीया माताजी की स्मृति में 27 गाँवों में लगाई सीता अशोक वृक्ष की पौध

### सभी 27 गाँव में लगाए जा रहे हैं 25-25 वृक्ष

**राजगढ़ ब्यावरा। मध्य प्रदेश**

गायत्री शक्तिपीठ खिलचीपुर के द्वारा शान्तिकुञ्ज एवं माननीय प्रधानमंत्री जी के आह्वान पर परम वंदनीया माताजी की स्मृति में 27 गाँवों में एक-एक सीता अशोक वृक्ष की पौध का रोपण किया गया। इन सभी गाँवों में 24-24 आम्र वृक्ष भी लगाए जा रहे हैं। शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री कन्हैयालाल शर्मा ने बताया कि हर गाँव के 25-25 भाई-बहिनों ने लगाए गए पौधों को गोद लेकर उन्हें पूर्ण विकसित करने का संकल्प लिया है।

श्री कन्हैयालाल जी ने बताया कि ये सभी गायत्री परिवार के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं, जो अपने गाँवों में 5-5 कुण्डीय गायत्री यज्ञ भी करायेंगे। क्षेत्र में दो स्थानों पर 24-24 कुण्डीय यज्ञों के आयोजन भी किये जायेंगे।

## श्रीराम स्मृति वन, एक्युप्रेशर गार्डन में वृक्षारोपण

**कांदुल, बोरियाखुर्द। छ.गढ़**

23 जून को रायपुर जिले के कांदुल गाँव के खेल मैदान से लगे भूभाग में वृक्षारोपण किया गया। श्री आशीष राय के अनुसार इस अवसर पर गायत्री परिवार और ग्रामवासियों ने मिलकर श्रद्धा, भक्ति के साथ वृक्षपूजन करते हुए 30 पौधे रोपे। इनकी देखरेख के लिए प्रकृति प्रेमी सहयोगियों की समिति बनाई गई है।

## विद्यालय में शिक्षकों ने किया वृक्षारोपण

**बगोदर, गिरिडीह। झारखण्ड**

बगोदर गायत्री परिवार द्वारा दिनांक 9 जुलाई को राज पब्लिक विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। कार्यक्रम संयोजक श्री संजय कुमार विभूति ने बताया कि विद्यालय परिवार के शिक्षक दंपतियों ने आरंभ में संसार का विषपान करने वाले शिव के रूप में वृक्षों का पूजन किया, उन्हें रक्षा सूत्र बाँधकर उसके संरक्षण का संकल्प लिया। कार्यक्रम की सफलता में सर्वश्री हीरालाल जी, प्रमोद प्रसाद, संजय, सुमन आदि अनेक लोगों का योगदान रहा।

## कुमाऊँ मण्डल वासियों ने दी 'हरेला' की शुभकामनाएँ

### कहा, हम सब मिलकर धरती को हराभरा बनाएँ

**हल्दूचौड़। उत्तराखण्ड**

उत्तराखण्ड के कुमाऊ मण्डल में हरियाली का संदेश देने वाला एक सुप्रसिद्ध त्यौहार है 'हरेला'। यह सावन आने का संदेश लेकर आता है। इस पर्व पर बड़े-बुजुर्ग सभी को आकाश की तरह ऊँचा उठने, धरती की तरह विस्तार करने, दूब की तरह फैल जाने तथा अच्छी फसल होने की शुभकामनाएँ देते हैं। कहते हैं कि इस दिन पेड़ की एक टहनी तोड़कर जमीन में गाड़ दी जाय तो वह भी जम जाती है।

इस वर्ष आषाढ़ शुक्ल दशमी, 16 जुलाई को हरेला पर्व मनाया गया। गायत्री शक्तिपीठ हल्दूचौड़ के व्यवस्थापक ने बताया कि कुमाऊँ मण्डल में गायत्री परिवार की सभी शाखाओं ने यह पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया और परम्परागत शुभकामनाओं के साथ धरती को हरियाली से आच्छादित करने के लिए भरपूर पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दी।

हरेला पर्व के दस दिन पूर्व ज्वारे बोने तथा हरेला के दिन उन्हें काट कर पहले भगवद्अर्पण करने और उसके बाद एक-दूसरे के कानों पर लगाकर शुभकामनाएँ देने की परंपरा है।

हरेला के दिन सभी महिला-पुरुषों के कानों में हरे-हरे पत्ते और ज्वारे लगे होते हैं। महिलाएँ घर के सभी सदस्यों को हरेला जरूर लगाती हैं। जो बच्चे बाहर गए होते हैं, उन्हें डाक से हरेला भेज कर शुभकामनाएँ देने की परम्परा है।

## माँ भगवती उच्च प्राथमिक विद्यालय का शुभारंभ

**जयपुर। राजस्थान**

राजस्थान के शिक्षा मंत्री माननीय श्री मदन दिलावर जी ने 2 जुलाई 2024 को किरण पथ, मानसरोवर, जयपुर स्थित श्री वेदमाता गायत्री वेदना निवारण केन्द्र में माँ भगवती उच्च प्राथमिक विद्यालय का उद्घाटन किया। उन्होंने इस स्थापना को गायत्री परिवार द्वारा मानवमात्र को सन्मार्ग पर चलाने के लिए चलाए जा रहे अनेक कार्यक्रमों में से अत्यंत महत्त्वपूर्ण चरण बताया।

आरंभ में शान्तिकुञ्ज हरिद्वार से आए शक्तिपीठ प्रकोष्ठ प्रभारी प्रतिनिधि श्री योगेन्द्र गिरी, राजस्थान जोन प्रभारी श्री गौरी शंकर सैनी, पूर्व आईएएस श्री दीपक नंदी एवं अन्य गणमान्यों ने माननीय मंत्री जी का साफा और दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया। माननीय श्री मदन दिलावर जी ने लोगों से वर्षाकाल में अधिक से अधिक पौधे लगाने का आह्वान किया। निरंतर बढ़ते धरती के तापमान का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि तापमान को कम करने की कोई मशीन नहीं है, केवल पेड़ लगाकर ही धरती का तापमान कम किया जा सकता है। शिक्षा मंत्री ने विद्यालय के सभी बच्चों को स्कूल बैग प्रदान किए।

### गरीब जरूरतमंद बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा व संस्कार

विद्यालय के उद्घाटन सत्र में उपस्थित बच्चों का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। इस अवसर पर बच्चों की शिक्षा का व्यय वहन करने वाले भामाशाहों का भी पुष्प वर्षा कर सम्मान किया गया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री योगेन्द्र गिरि ने कहा कि गायत्री परिवार शक्तिपीठों में संस्कार शाला खोल कर प्राचीन गुरुकुल परंपरा के आदर्शों को पुनर्जीवित कर रहा है।

गायत्री परिवार राजस्थान के जोन समन्वयक श्री ओमप्रकाश अग्रवाल ने बताया कि माँ भगवती उच्च प्राथमिक विद्यालय में अनाथ और अत्यंत गरीब परिवारों के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा और संस्कार दिए जाएँगे। बच्चों की फीस, बैग, ड्रेस, स्टेशनरी, खेल सामग्री सहित जरूरत के सामान का खर्च गायत्री परिवार उठाएगा। विद्यालय की प्रार्थना में गायत्री मंत्रोच्चार व पाठ्येतर गतिविधियों में यज्ञ का समावेश होगा। प्रार्थना सभा में सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने वाली कहानी या सत्य घटनाएँ सुनाई जाएँगी।

## प्रत्येक प्रज्ञा संस्थान (शक्तिपीठ/प्रज्ञापीठ) के लिए शान्तिकुञ्ज के विशेष दिशा-निर्देश

युग प्रवर्तक ऋषियुग्म परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी एवं परम वंदनीया माता भगवती देवी जी के तप और प्राण से अनुप्राणित गायत्री परिवार के समस्त प्रज्ञा संस्थान (शक्तिपीठ/प्रज्ञापीठ/चेतना केन्द्र) सामान्य मंदिर, आश्रम या देवालय नहीं हैं। यह राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए समर्पित युग सैनिकों की छावनी है, युग निर्माणी आस्थाओं के पोषक केन्द्र हैं। इन सभी संस्थानों में परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी द्वारा निर्देशित **आन्तरिक एवं बाह्य** गतिविधियाँ अनिवार्य रूप से चलनी ही चाहिए। सभी केन्द्र निम्न गतिविधियाँ अनिवार्य रूप से चलायें।

### दैनिक गतिविधियाँ (आन्तरिक)

- प्रातः जागरण प्रार्थना, आरती, ध्यान एवं ऋषि चिन्तन (अमृतवाणी), यज्ञ-संस्कार, सत्संकल्प का वाचन।
- दोपहरकालीन ज्योति अवधारण साधना, विचार विमर्श गोष्ठी/सत्संग, सामूहिक श्रमदान, बाल संस्कार शाला।
- सायंकालीन नादयोग, आरती, चालीसा पाठ।

### दैनिक गतिविधियाँ (बाह्य)

**दो घण्टा प्रतिदिन जनसम्पर्क :** नये परिजनों से मिलने-जुलने का क्रम (नये धर्म घट एवं अन्न घट की स्थापना करने एवं संस्कारों के लिए लोगों को प्रेरित, प्रोत्साहित करने हेतु)।

- घर-घर जाकर विभिन्न यज्ञ-संस्कार आदि कार्यक्रम सम्पन्न कराना।
- क्षेत्र में नियमित-झोला पुस्तकालय, ज्ञानरथ, स्टिकर अभियान एवं पत्र-पत्रिकाओं का विस्तार तथा वितरण। • अंशदानियों से सम्पर्क।

### साप्ताहिक गतिविधियाँ (आन्तरिक एवं बाह्य)

• प्रभात फेरी। • सामूहिक साधना। • दीवार लेखन। • प्रज्ञा संस्थान (शक्तिपीठ/प्रज्ञापीठ) परिसर की सम्पूर्ण सफाई। • विद्यालयों में बच्चों के बीच गोष्ठी-मार्गदर्शन, प्रोत्साहन। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भाग लेने हेतु प्रेरणा देना। • मण्डलों की साप्ताहिक गोष्ठियों की नियमितता एवं सार्थकता की समीक्षा। उनको प्रोत्साहन, सहयोग देने की समुचित व्यवस्था। • अखण्ड ज्योति आदि पत्रिकाओं के पाठकों का मूल्यांकन।

**अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।**

# सत्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन, सेवा का सम्मान, नवचेतना जागरण अभियान

## नशामुक्ति पखवाड़ा : एएसआई ने बच्चों को दी शिक्षा
## डरें नहीं, पुलिस को सूचित करें

**जोबट, अलीराजपुर। मध्य प्रदेश**

अंतर्राष्ट्रीय नशा निवारण दिवस के उपलक्ष्य में जोबट में नशा मुक्ति पखवाड़ा मनाया गया। इसके अंतर्गत एएसआई श्री मोहन सिंह डाबर ने गायत्री शक्तिपीठ उ. मा. विद्यालय में छात्र-छात्राओं को स्थानीय सरल भाषा में तरह-तरह के नशे के दुष्प्रभाव बताये। उन्होंने बच्चों को यह हौसला भी दिलाया कि यदि कोई व्यक्ति आपको नशा करने के लिए प्रेरित करे, तो आप बिना किसी झिझक के थाने में आकर व्यक्तिगत रूप से रिपोर्ट दर्ज करवायें, डरे नहीं।

थाना प्रभारी श्री अंकित जाट ने उपस्थित छात्र-छात्राओं को किसी भी प्रकार का नशा नहीं करने की शपथ दिलाई और कहा कि कोई भी आपको नशे का प्रलोभन दे तो आप 100 नंबर पर डायल कर पुलिस को सूचित कर सकते हैं।

बच्चों को नशे से बचने के लिए कई प्रकार के उपाय एवं उपचार बताए गए। कांस्टेबल श्री रामकुमार गौतम एवं विद्यालय के समस्त स्टाफ का सराहनीय सहयोग रहा। प्राचार्य श्रीमती रविकांता वर्मा द्वारा आभार ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

विद्यार्थियों को संबोधित करते एएसआई

## गायत्री परिवार ने चिकित्सकों के प्रति आभार व्यक्त किया

उदयपुरवाटी के सामुदायिक केन्द्र में चिकित्सकों का अभिनंदन ।

राजनांदगाँव में डॉक्टर्स को पुष्पगुच्छ भेंट करते गा.वि. पीठ के विद्यार्थी

**उदयपुरवाटी, नीम का थाना। राज.**

अखिल विश्व गायत्री परिवार की स्थानीय इकाई के तत्त्वावधान में कस्बे के राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सीएचसी में कार्यरत चिकित्सकों का गायत्री महामंत्र का दुपट्टा पहनाकर एवं पुष्प भेंट कर सम्मान किया गया।

इस कार्यक्रम को एडवोकेट मोतीलाल सैनी एवं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की केन्द्र संचालिका बीके सुनीता बहिन तथा सर्वोदय कार्यकर्ता बद्रीप्रसाद तंवर ने संबोधित किया। उन्होंने

### राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस मनाया

डॉ. बिधानचंद्र रॉय को याद किया, जिनके जन्मदिन के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय चिकित्सा दिवस मनाया जाता है। वे केवल एक डॉक्टर ही नहीं, बल्कि देश के महान शिक्षाविद् और स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने कहा कि चिकित्सक समुदाय का जीवन सेवाभाव, त्याग, साहस एवं समर्पण का प्रतीक है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सीएचसी प्रभारी डॉ. अनिमेष गुप्ता ने कहा कि इस प्रकार के सम्मान से डॉक्टर्स के मनोबल और साहस में वृद्धि होती है।

### अस्पतालों में पहुँचे विद्यार्थी

**राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़**

गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव ने 3 जुलाई को डॉक्टर्स डे मनाते हुए प्रार्थना सभा में चिकित्सकों की सेवाओं के प्रति आभार व्यक्त किया। कक्षा 11वीं एवं 12वीं के विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के साथ शासकीय मेडिकल कॉलेज पेण्ड्री पहुँचकर डॉ.प्रकाश खूँटे को, पारख नर्सिंग होम में डॉ.आदित्य पारख को, ओम डेंटल क्लिनीक में डॉ.सौरभ जायसवाल एवं उनकी टीम को पुष्पगुच्छ के साथ शुभकामनाएँ दीं। सभी चिकित्सकों ने विद्यार्थियों को खूब मन लगाकर पढ़ने एवं अनुशासित रहने की सीख दी। उन्होंने अपनी मेडिकल व्यवस्थाओं का अवलोकन भी करवाया।

## हरियाली महोत्सव पर रक्तदान शिविर

### 60 यूनिट रक्तदान हुआ, रक्तदाताओं को पौधा भेंट किया गया

**आगरा। उत्तर प्रदेश** : 'एक रक्तदान बचाए तीन जान।' इसी भावना के साथ अखिल विश्व गायत्री परिवार जिला आगरा द्वारा बालाजी युवा मंडल कमलानगर, बालाजी महिला मंडल कमला नगर, दिया ग्रुप कमला नगर आगरा के सहयोग से विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन गायत्री शक्तिपीठ बालाजी नगर, कमला नगर आगरा में किया गया। इसमें लगभग 60 यूनिट रक्त का संकलन हुआ। जिला वृक्ष गंगा अभियान के प्रभारी शिवांक उपाध्याय ने सभी रक्तदाताओं को उपहार में एक-एक वृक्ष की पौध दी।

रक्तदान महोत्सव का शुभारंभ पार्षद श्री हरिओम अग्रवाल, गायत्री शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री कैलाश वर्मा, जिला समन्वयक श्री सुरेश चंद्र सक्सेना, जिला रक्तदान संयोजक श्री एमएम शर्मा युवा रक्तदान संयोजक इशांक अग्रवाल, वीरेश वार्ष्णेय ने देवपूजन और दीप प्रज्वलन कर किया। आयोजन में लोकहितम ब्लड बैंक का विशेष सहयोग मिला।

## आरंभ हुई नई बाल संस्कार शाला
### मुम्बई अश्वमेध यज्ञ से प्रभावित समाज से मिला सहयोग

**खारघर, रायगढ़। मुंबई**

फरवरी 2024 में सम्पन्न मुम्बई अश्वमेध यज्ञ से लाखों लोगों को गायत्री परिवार का परिचय मिला। कई प्रतिष्ठित संस्थान और व्यक्तियों ने इसके उदात्त उद्देश्यों को सराहा। कई लोग गुरुदेव के विचारों के विस्तार और मिशन के कार्यक्रमों में सहयोग के लिए आगे आ रहे हैं।

खारघर की युवा प्रेरणा सामाजिक संस्था ने खारघर के सेक्टर-19 में स्थित उद्यान में सामाजिक कार्यों के लिए निर्मित एक कक्ष गायत्री परिवार को उपलब्ध कराया है। गायत्री जयंती-16 जून के शुभ अवसर पर वहाँ बाल संस्कार शाला प्रारंभ की गई।

युवा प्रेरणा सामाजिक संस्था के संस्थापक श्री किरण प्रकाश पाटिल एवं क्षेत्र की पार्षद श्रीमती नेत्रा किरण पाटिल ने गुरुसत्ता एवं माँ गायत्री के समक्ष दीप प्रज्वलन कर बाल संस्कार शाला का शुभारंभ किया। श्री किरण पाटिल ने सभी को युवा प्रेरणा सामाजिक संस्था के कार्यों से अवगत कराया। उन्होंने पालकों से गायत्री परिवार की निःस्वार्थ सेवाओं का लाभ लेकर अपने बच्चों को सद्गुणी, संस्कारवान बनाने के लिए प्रेरित किया।

खारघर गायत्री परिवार के श्री अवधेश नारायण वर्मा ने बालसंस्कार शाला के उद्देश्यों की जानकारी दी। इस शुभ अवसर पर बाल संस्कार शाला में आने वाले बच्चों और उनके अभिभावकों ने वृक्षारोपण किया। डॉ. आरती अग्रवाल ने वृक्षों का महत्त्व बताया। श्री अमित कुमार चौरे ने बच्चों को योगाभ्यास कराया। श्री राजेंद्र अग्रहरि ने जीवन जीने की कला का पाठ पढ़ाया। बाल संस्कार शाला उद्घाटन समारोह का समापन बच्चों में फलों के वितरण के साथ हुआ।

## बच्चों ने निकाली पर्यावरण जागरूकता शोभायात्रा
### बाँटे नीम, तुलसी, गिलोय जैसे औषधीय गुणयुक्त पौधे

**राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़**

गायत्री विद्यापीठ के नन्हें बच्चों ने 3 जुलाई को पर्यावरण जागरूकता रैली निकालकर पर्यावरण दिवस एवं ग्रीन-डे मनाया। इस अवसर पर बच्चों ने आकर्षक वेशभूषा में वन्य जीवों के संरक्षण हेतु संदेश दिया। उन्होंने अपने नन्हें-नन्हें हाथों से लोगों को नीम, तुलसी जैसे महत्त्वपूर्ण औषधीय पौधों के साथ-साथ हरी शाक-भाजियों के बीज भी दिए। नन्हें-मुन्ने विद्यार्थी, शिक्षकवृंद हरे रंग की वेशभूषा में पूरे वातावरण में आच्छादित हो रहे थे। बच्चों

द्वारा लगाए गए ''वृक्ष हैं तो हम हैं।'', ''पानी बचाओ, जीवन बचाओ।''आदि नारों ने दर्शकों को खूब प्रभावित किया।

## कारागार में आयोजित हुआ जीवन साधना शिविर

शिविर के समापन पर बंदियों ने निकाली व्यसनमुक्ति रैली

**बड़वानी। मध्य प्रदेश**

केंद्रीय जेल बड़वानी में गायत्री परिवार और जेल प्रशासन के संयुक्त तत्त्वावधान में बारह दिवसीय जीवन साधना शिविर का आयोजन हुआ। इसके समापन सत्र में कारा अधीक्षक शेफाली तिवारी ने गायत्री परिवार की प्रेरणा और प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि बंदियों द्वारा प्रतिदिन पाँच बजे उठकर ध्यान, प्राणायाम करना, गायत्री मंत्र लेखन और स्वाध्याय में रुचि लेना अत्यंत सुखद है। वे बेहतर अनुशासन का परिचय दे रहे हैं।

गायत्री परिवार की ओर से समापन सत्र को जिला समन्वयक श्री महेंद्र भावसार एवं सालीटांडा शक्तिपीठ के श्री विवेकानंद डाबर ने संबोधित किया। उन्होंने अनेक उदाहरणों के साथ बंदियों को सकारात्मक चिंतन प्रदान किया। उन्होंने कहा कि तप से मिट्टी भी सोना बन जाती है। आप इसे जीवन साधना से प्रारब्धों को काटने का समय समझें और पूरे मनोयोग से आत्म परिष्कार की साधना करते हुए बेहतर इंसान बनकर यहाँ से निकलें।

जीवन साधना सत्र का समापन एक रैली से हुआ, जिसमें बंदीगण पंक्तिबद्ध होकर हाथों में व्यसनमुक्ति के पोस्टर लिये उमंग और उल्लास के साथ नारे लगाते चल रहे थे। गोपाल कृष्ण प्रजापति ने गायत्री परिवार, कारा प्रशासन, गायत्री परिजन और समस्त बंदियों के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

> वंशी से किसी ने पूछा - "कृष्ण तुम्हें बहुत प्यार करते हैं, चाहते हैं आखिर बात क्या है ?" वंशी का साधारण सा उत्तर था-"मैंने अपने अन्दर का सारा द्रव्य निकाल कर उसे शून्य बना लिया है। अब गन्दगी के नाम पर मेरे अन्दर कुछ नहीं रहा। शायद इसी विशेषता के कारण कृष्ण का प्रेम मुझे प्राप्त है।"

## पिछड़ी बस्तियों में पहुँच कर गरीब बच्चों का व्यक्तित्व निखार रहे हैं जीपीवायजी कोलकाता से जुड़े युवा

**कोलकाता। पश्चिम बंगाल**

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता कई वर्षों से गरीब बच्चों को सद्गुणी, संस्कारवान बनाने के लिए तरह-तरह के कार्यक्रम चला रहा है। उनके द्वारा 'प्रोजेक्ट अपराजिता' के अंतर्गत झुग्गी-झोंपड़ियों में रहने वाले बच्चों को निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएँ दी जाती हैं, वस्त्र, चप्पल, पाठ्य सामग्री आदि वितरित किए जाते हैं। हाल ही में शाखा द्वारा झुग्गी बस्ती में बाल संस्कार शाला भी प्रारंभ की गई है। इसमें भाग ले रहे एक बच्चे का जन्म दिवस संस्कार मनाया गया। इस अवसर पर बालक के अंतःकरण के

झुग्गी बस्ती में पेड़ के नीचे चल रही पाठशाला

भाव दर्शनीय थे। एक नया विश्वास, नई चमक उसकी आँखों में दिखाई दी, जैसे उसे ईश्वर के अनंत आशीर्वाद की अनुभूति हो रही हो।

## मुम्बई में चल रहा है गृहे-गृहे यज्ञ अभियान

**मुम्बई। महाराष्ट्र**

मुम्बई की टीम 'दिया' मुंबई अश्वमेध यज्ञ के अनुयाज के अंतर्गत घर-घर यज्ञ, संस्कार की सुगंध फैलाते हुए ऋषि संस्कृति की पुण्य परम्परा को पुनर्जीवित कर रही है। श्री ए.एन. वर्मा ने बताया कि आधुनिक भारत में यह पहल सामूहिक चेतना को परिष्कृत करती है और समाज में सद्भाव बढ़ाती है। यह मानव में देवत्व जगाने का तथा चरित्र निर्माण का एक दिव्य अभियान है।

माटुंगा के रिद्धि सिद्धि टावर्स में बीना गाँधी के घर गृह प्रवेश का कार्यक्रम हुआ। इसमें 50 लोगों ने भाग लिया, अधिकांश पहली बार यज्ञ में आए थे। एशफोर्ड टावर्स, भांडुप में राघव जोशी के नवजात शिशु का नामकरण संस्कार किया गया। दोनों ही कार्यक्रमों में गायत्री मंत्र लेखन पुस्तकें और युगसाहित्य वितरित किए गए। यजमानों ने तुलसी के पौधे लगाने, गायत्री मंत्र का जाप करने और प्रतिदिन सूर्य अर्घ्य देने का संकल्प लिया।

**सोने की परीक्षा अग्नि में पड़ने पर होती है। इसी प्रकार मनुष्य के व्यक्तित्व की परीक्षा प्रलोभनों और आपत्तियों के बीच होती है।**

# देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की इंटर्नशिप

## अपनी प्रतिभा और विचारों से किया सांस्कृतिक चेतना का नवजागरण

कांगड़ा जिले में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की संगीतमय प्रस्तुति का लाभ लेते विद्यार्थी

**कांगड़ा। हिमाचल प्रदेश**

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के छात्र दीपक शर्मा, गोपाल व सुमित का दल अपनी एक मासीय परिवीक्षा के लिए जिला कांगड़ा के धर्मशाला, शाहपुर, ज्वाली, देहरा, लगडू, धीरा में पहुँचा। उन्होंने कई शिक्षण संस्थानों के अतिरिक्त सेन्ट्रल जेल धर्मशाला तथा पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज डरोह में कार्यक्रम कराते हुए योग एवं जीवन प्रबन्धन संबंधित सारगर्भित शिक्षाएँ प्रदान कीं।

समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्वों का बोध कराते हुए उन्होंने लोगों से कहा कि युग परिवर्तन की यह परिस्थितियाँ जगने और जगाने, उठने और उठाने तथा स्वयं आगे बढ़कर दूसरों को आगे बढ़ाने की हैं। जो समय को पहचान कर भगवान के काम में लग जाते हैं, वे श्रेष्ठ सौभाग्य के अधिकारी बनते हैं। इन कार्यक्रमों में जोन प्रभारी धर्म सिंह नरयाल, उत्तम सिंह मेहता, राजीव सूद, सुशील वर्मा तथा अनिल राणा भी साथ रहे।

### समारोहपूर्वक दी विदाई

**देहरादून। उत्तराखण्ड**

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की छात्रा कु. सुजाता घोष, कु. सपना ठाकुर, कु. सिन्धु सैनी ने अपने परिवीक्षाकाल में देहरादून क्षेत्र के लोगों की भरपूर सेवा की। अपने एक मासीय परिवीक्षाकाल में उन्होंने गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ, दीपयज्ञ और संस्कार अभियान को खूब प्रचलित किया। सैकड़ों लोगों ने उनकी एक्यूप्रेशर विद्या से उपचार करा कर स्वास्थ्य लाभ भी प्राप्त किया।

परिवीक्षाकाल के अंतिम दिन गायत्री चेतना केन्द्र बडोवाला में इन छात्राओं को समारोहपूर्वक विदाई दी गई। इस अवसर पर उपस्थित उत्तराखण्ड के प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जय सिंह यादव ने छात्राओं की नैष्ठिक सेवाओं का अभिनंदन करते हुए मंगल तिलक कर, स्मृति चिह्न एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर भावभरी विदाई दी। समारोह में कई वरिष्ठ कार्यकर्त्ता सर्वश्री राधाकृष्ण सेमवाल, श्रीमती राजेश्वरी पन्त, दिनेश चन्द्र मैखुरी, श्री जयराम जी, परिव्राजक शिवाकान्त त्रिपाठी, आर.सी. जोशी, श्री आर.सी. गुप्ता एवं श्रीमती बीना ठाकरे आदि उपस्थित थे।

# शिक्षण संस्थानों के पुस्तकालयों में वाङ्मय स्थापना

**413** पुस्तकालयों में हुई स्थापना | **13** वर्षों से चल रहा है अभियान

गोयल आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एवं चिकित्सालय तथा गोयल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी एण्ड साइंसेज में वाङ्मय स्थापना समारोह की झाँकी
इंसेट में श्री उमानंद शर्मा, विचार क्रान्ति ज्ञानयज्ञ अभियान के संयोजक युगऋषि के साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए

**लखनऊ। उत्तर प्रदेश**

गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर, लखनऊ द्वारा विचार क्रान्ति ज्ञान यज्ञ अभियान के अन्तर्गत दिनांक 29 जून 2024 को गोयल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंस अयोध्या रोड़, लखनऊ के केन्द्रीय पुस्तकालय में परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित वाङ्मय के समस्त खण्डों की स्थापना की गई। साहित्य गायत्री परिवार के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री जितेन्द्र सिंह ने अपने पूर्वजों की स्मृति में भेंट किया है।

गायत्री ज्ञान मंदिर द्वारा विगत लगभग 13 वर्षों से चलाए जा रहे वाङ्मय स्थापना अभियान के अंतर्गत यह 413 वीं स्थापना थी। इस अवसर पर वाङ्मय स्थापना अभियान के मुख्य संयोजक श्री उमानंद शर्मा, संस्थान के निदेशक डॉ. करुणा शंकर शुक्ला, विभागाध्यक्ष डॉ. अमित निगम, डॉ. वंदना सिंह, संकाय सदस्य, अधिकारीगण एवं छात्र-छात्रायें तथा गायत्री परिवार की ओर से देवेन्द्र सिंह, विजय, जितेन्द्र सिंह आदि उपस्थित रहे।

इससे पूर्व सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री हंस जी ने अपने पूर्वजों की स्मृति में वेद आई.एस.एस. सेक्टर-सी अलीगंज लखनऊ के केन्द्रीय पुस्तकालय में एवं कॉन्वेट कॉलेज कुर्सी रोड, लखनऊ में समस्त 79 खण्डों की स्थापना कराई। श्रीमती सावित्री एवं उनकी पुत्रियों सुश्री गीता शर्मा, पार्वती शर्मा, नीलम शर्मा, स्वाती शर्मा एवं चाँदनी शर्मा ने स्व. रवि कुमार उपाध्याय की स्मृति में गोयल आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एवं चिकित्सालय, गोयल कैम्पस, अयोध्या रोड़ लखनऊ में तथा श्रीमती कैलाश यादव ने अपने प्रिय जीवनसाथी स्व. डॉ. वी.एस. यादव जी की स्मृति में गोयल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी एण्ड साइंसेज, गोयल कैम्पस, अयोध्या रोड़, लखनऊ में परम पूज्य गुरुदेव का सम्पूर्ण वाङ्मय स्थापित कराया।

सभी कार्यक्रम शिक्षण संस्थानों के प्रबंधकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों की उपस्थिति में समारोहपूर्वक सम्पन्न हुए। वाङ्मय स्थापना अभियान संयोजक श्री उमानंद शर्मा ने इस साहित्य को जीवन का कायाकल्प करने वाला साहित्य बताते हुए इसके नियमित अध्ययन की प्रेरणाएँ दीं। इस अवसर पर वाङ्मय दानदाता और गायत्री परिवार के वरिष्ठ परिजन भी उपस्थित रहे।

सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों में अखण्ड ज्योति पत्रिकाएँ निःशुल्क वितरित की गईं।

# प्रबुद्ध लोगों तक पहुँचे हैं पूज्य गुरुदेव के विचार

**मुम्बई। महाराष्ट्र** : शैलेश जे. मेहता स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, आईआईटी बॉम्बे द्वारा भारतीय ज्ञान प्रणाली पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को प्रबुद्धों-गणमान्यों तक पहुँचाने की दृष्टि से बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ।

समापन दिवस पर शोध पत्र और केस स्टडी प्रस्तुतियाँ, पैनल चर्चा और पोस्टर प्रस्तुतियों सहित कई गतिविधियाँ आयोजित हुईं। इस अवसर पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के दो संकाय सदस्यों ने अखिल विश्व गायत्री परिवार पर एक केस स्टडी प्रस्तुत की, जिसमें पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी से प्रबंधन की सीख पर प्रकाश डाला गया। दिया, मुम्बई की सुश्री सुचिता शेट्टी ने पूरे भारत से आए प्रतिभागियों में युगसाहित्य वितरित किया तथा उनकी शिक्षाओं को गणमान्यों के साथ साझा किया। युवा प्रतिभागियों को लूज नॉट योर हार्ट और अखंड ज्योति पत्रिकाएँ व गणमान्यों को विचार क्रांति के सदवाक्य दिए गए।

# युवा कार्यकर्त्ता मण्डल प्रशिक्षण शिविर

## ज्ञानरथ और झोला पुस्तकालय चलाने के संकल्प उभरे

**देवास। मध्य प्रदेश**

इन दिनों पूरे मध्य प्रदेश में जन्म शताब्दी वर्ष की तैयारियों के अंतर्गत एक दिवसीय जिला स्तरीय युवा कार्यकर्त्ता मण्डल प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन हो रहा है। इसी कड़ी में देवास गायत्री शक्ति पीठ पर सम्पन्न हुए शिविर में अभूतपूर्व संकल्प उभरे, शानदार सफलता मिली। शिविर में इंदौर उपजोन प्रभारी श्रीकृष्ण शर्मा, उज्जैन उपजोन प्रभारी श्री महेश आचार्य, प्रज्ञापीठ संरक्षक दुर्गा समाधिया और उज्जैन युवा समन्वयक श्री मुकेश पाटीदार का विशिष्ट मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

''प्रत्येक कार्यकर्त्ता किसी न किसी मण्डल और रचनात्मक अभियान से अवश्य जुड़े।'' - प्रमोद निहाले

इस शिविर में शक्तिपीठ और प्रज्ञापीठ द्वारा ज्ञानरथ चलाने का निर्णय लिया गया। 11 परिजनों ने घर-घर जाकर झोला पुस्तकालय चलाने का संकल्प लिया। श्री कन्हैयालाल मोहरी ने उन्हें इसके लिए झोला और साहित्य उपलब्ध कराने का वचन दिया। श्रीयुत् श्रीकृष्ण शर्मा ने सभी कार्यकर्त्ताओं को 'स्वाध्याय बिना शयन नहीं' की तर्ज पर सत्साहित्य विस्तार बिना शयन नहीं की प्रेरणा दी।

युवा प्रकोष्ठ जिला समन्वयक श्री प्रमोद निहाले ने प्रत्येक कार्यकर्त्ता को किसी न किसी मंडल से और किसी न किसी रचनात्मक अभियान से अवश्य जुड़ने की प्रेरणा दी।

# नवप्रवेशी विद्यार्थियों का विद्यारंभ संस्कार

**हरदा। मध्य प्रदेश**

गायत्री विद्या मंदिर हा. से. स्कूल नौसर में दिनांक 8 जुलाई को 20 नवप्रवेशी बालक-बालिकाओं का सामूहिक विद्यारंभ संस्कार सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम सभी बच्चों के पालकों और शिक्षकों की गरिमामयी उपस्थिति में नव चेतना केन्द्र काथड़ी के माध्यम से सम्पन्न कराया गया। विद्यालय संचालक श्री योगेन्द्र सिंह जी मौर्य ने इस संस्कार समारोह के आयोजन में मुख्य योगदान दिया।

श्री मंगलेश जी तिवारी ने पूरे विधि-विधान के साथ सामूहिक विद्यारंभ संस्कार संपन्न कराया। इस अवसर पर उन्होंने सभी को परम पूज्य गुरुदेव द्वारा पुनर्जीवित की गई संस्कार परम्परा का परिचय देते हुए बच्चों को मानव जीवन को गौरवान्वित और सार्थक करने वाले संस्कार देने का आह्वान किया।

# बाल संस्कारशाला

**विश्रामपुर, पलामू। झारखण्ड**

स्थानीय युवा मण्डल के सदस्य योगेश, विकास, रुद्र, पंकज, आनंद इत्यादि बाल संस्कार शाला के माध्यम से गरीब बच्चों को नैतिकता और आध्यात्मिकता का पाठ पढ़ा रहे हैं। प्रकृति की गोद में चल रही यह पाठशाला न केवल बच्चों के अभिभावकों के लिए, अपितु सभ्य सामाज के लिए भी सेवा का अद्वितीय आदर्श प्रस्तुत कर रही है। गायत्री मंत्र, चालीसा पाठ, प्रेरणाप्रद मनोरंजक कहानियों से बच्चों का स्वभाव और संस्कार बदलते देख पूरा समाज गद्गद है।

# दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

**श्री दीपचंद साहू, भैंसदेही, बैतूल। म.प्र.** : ग्राम गुदगाँव निवासी वरिष्ठ ऊजार्वान कार्यकर्त्ता श्री दीपचंद साहू दिनांक 14 जुलाई 2024 को लगभग 74 वर्ष की आयु में स्थूल देह त्याकर परम चेतना में विलीन हो गए। वे एम.पी.ई.बी. सारनी से अधीक्षण अभियंता के पद से सेवानिवृत्त हुए और आजीवन मिशन के कार्यों में सक्रिय रहे। मिशन के प्रति समर्पण ऐसा कि गत वर्ष ही उन्होंने सेवा निवृत्ति से मिली धनराशि में से 25 लाख रुपये का अनुदान शान्तिकुञ्ज को दिया है। स्व. श्री दीपचंद साहू जी की ही तरह उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा साहू, बेटे डॉ. विनोद साहू एवं बेटी रुचि साहू (हैदराबाद) युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित हैं।

**श्रीमती चंद्रा शर्मा, उज्जैन। मध्य प्रदेश** : परम पूज्य गुरुदेव के प्रति अनन्यभाव से समर्पित साधिका श्रीमती चंद्रा शर्मा 21 जून 2024 को अपनी पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना के साथ एकाकार हो गईं। वे उज्जैन में गायत्री परिवार की संस्थापक सदस्य और महिला सशक्तीकरण की एक जीवन्त आदर्श थीं। उन्होंने उज्जैन में गायत्री शक्तिपीठ के निर्माण में भी अग्रणी भूमिका निभाई थी।

**श्री वंशीधर सूठवाल बानसुर, कोटपुतली बहरोड़। राजस्थान**

बानसुर निवासी 85 वर्षीय कार्यकर्त्ता श्री बंशीधर सूठवाल जी का दिनांक 6 जुलाई 2024 को देवलोकगमन हो गया। भारतीय सेना के सिग्नल रेजिमेंट में हवलदार के पद से 1982 में सेवानिवृत्त होने के बाद से ही वे गायत्री परिवार के मिशन के लिए पूरी तरह समर्पित रहे। उन्होंने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु तथा मिशन की पत्रिकाओं के विस्तार हेतु अविस्मरणीय सेवाएँ प्रदान कीं।

**आदर्शों से प्रेम करो, ताकि उनके प्रकाश में हर सज्जन प्रियपात्र बन जाए।**

# क्रान्ति की नई-नई गाथाएँ लिख रहे हैं नवयुग के चितेरे

## उत्तराखण्ड में संकल्पित यज्ञ अभियान
## 125 स्थानों पर होंगे पाँच कुण्डीय यज्ञ

**उत्तरकाशी। उत्तराखण्ड**

मंदिर जनजागरण के केन्द्र बनें, इस भाव के साथ गायत्री परिवार ट्रस्ट उत्तरकाशी ने डुंडा विकासखण्ड के ग्राम ब्रह्मखाल में पाँच कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया। श्री राधावल्लभ नौटियाल और जिला समन्वयक श्री जय स्वरूप बहुगुणा की इस आयोजन में मुख्य भूमिका थी। उन्होंने ग्रामवासियों को देवभूमि की गरिमा के अनुरूप व्यक्तित्व और समाज के निर्माण के लिए यज्ञ पिता और गायत्री माता को अपनाने और इन्हें घर-घर में पहुँचा देने की प्रेरणा दी।

> गायत्री परिवार ट्रस्ट उत्तरकाशी ने वर्ष 2024-25 में 125 स्थानों पर पाँच कुण्डीय यज्ञ कराने का संकल्प लिया है। ग्राम ब्रह्मखाल में आयोजित यज्ञ संकल्पित अभियान का तीसरा कार्यक्रम था।

## नारी सशक्तीकरण सम्मेलन में 1800 कन्याओं ने भाग लिया

**पटना। बिहार**

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ पटना ने 7 जुलाई 2024 को गर्ल्स एम्पावरमेण्ट कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री मनीष कुमार ने उपस्थित 1800 कन्याओं को संबोधित करते हुए नारी गौरव का बोध कराया। उन्होंने कहा कि नारी मानव ही नहीं, मानवता की भी जन्मदात्री है। नारी ही समाज का आधार है। उसे अपनी सामर्थ्य को पहचानने के लिए गायत्री उपासना-साधना को जीवन में धारण करने की आवश्यकता है।

इस कार्यक्रम में बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, उ.प्र., प. बंगाल की युवतियाँ उपस्थित थीं। सर्वश्री अरविंद, ज्ञानप्रकाश, प्रिंस रंजन, निशांत रंजन, डॉ. शशांक, अभिषेक आदि का कार्यक्रम की सफलता में अग्रणी योगदान रहा।

## पुरस्कार, प्रशिक्षण, सम्मान की त्रिवेणी बही

मातृशक्ति श्रद्धा संवर्धन रथयात्राओं को सफल बनाने में सहयोगी परिजनों का सम्मान

**उज्जैन। मध्य प्रदेश**

गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन पर 30 जून 2024 को आयोजित तीन कार्यक्रमों के माध्यम से पुरस्कार, प्रशिक्षण और सम्मान की त्रिवेणी बही। प्रथम सत्र में मातृशक्ति अखंडदीप श्रद्धा संवर्धन उप यात्रा में सहयोगी 75 कार्यकर्त्ताओं को स्मृति चिन्ह और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। दूसरे सत्र में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 2023 में जिला स्तर पर अग्रणी रहे 24 विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। अंतिम तृतीय सत्र में जिले के युवा कार्यकर्त्ताओं की प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित हुई।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उज्जैन उपजोन समन्वयक श्री महेश आचार्य थे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कार्यकर्त्ता और विद्यार्थी सभी को विनम्रता और कड़ी मेहनत के साथ सतत आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि सम्मान पाकर अभिमान न हो, पुरस्कार पाकर विराम का विचार न उपजे तथा प्रशिक्षण के बाद सतत प्रैक्टिस के साथ प्राप्त विद्या को व्यवहार में लाया जाए, इसी में इनकी सार्थकता है।

> महाकाल की मंगलमयी योजना में भागीदारी के सौभाग्य की याद दिलाई।

कार्यशाला की प्रमुख वक्ता डॉ. श्रीमती नीति टंडन थीं। उन्होंने कहा कि युग निर्माण परिवार के युवाओं को महाकाल की मंगलमयी योजना में हाथ बँटाने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। जो सौभाग्य आपको प्राप्त हो रहा है, उसमें अपने साथियों को भी शामिल कीजिए। प्रश्नोत्तरी से युक्त कार्यशाला में श्री राम प्रसाद सरिया, श्री बलराम जी पटवारी, श्री महेश बडिया, श्री श्याम पाटीदार, श्री मुकेश पाटीदार, पद्मा गोथरवाल ने भी विचार व्यक्त किए।

# नवोदित पीढ़ी में आध्यात्मिकता का उल्लास जगा रहे हैं प्रशिक्षण शिविर

## कन्या, किशोर कौशल प्रशिक्षण शिविर

**चंद्रपुर। महाराष्ट्र**

वेदमाता गायत्री शक्तिपीठ, दाताला, चंद्रपुर में दिनांक 20 से 22 जून 2024 की तिथियों में कन्या कौशल शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 10 से 25 वर्ष की आयु वर्ग की लगभग 130 बालिकाओं ने भाग लिया। उन्हें व्यक्तित्व विकास, स्वास्थ्य संवर्धन, भारतीय संस्कृति का दर्शन, आत्मरक्षा, प्रतिभा विकास, किशोर लड़कियों की समस्या और समाधान आदि विषयों पर प्रेरित, प्रशिक्षित किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन चंद्रपुर की प्रसिद्ध रेडियोलॉजिस्ट डॉ. प्रेरणा कोलते ने किया। श्री महादेवजी माकड़े ने योग, डॉ. गादेवार ने आहार, श्री विनोद मदनकर ने आदर्श जीवन शैली, श्री वासुदेव राठौड़ ने व्यसनमुक्ति तथा अनेक अन्य वक्ताओं ने विविध जीवनोपयोगी विषयों पर उद्बोधन दिये। डॉ. शैलेंद्र कुमार शुक्ल, श्री महेश कानपिल्लेवार, वासुदेव जी राठौड़, श्री रत्नाकर हजारे, श्री अशोक शर्मा, श्री मनोज मालवीय आदि समस्त कार्यकर्त्ताओं की समन्वित सक्रियता से एक अत्यंत सफल और लोकप्रिय शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें नारी सशक्तीकरण का आदर्श स्वरूप उभरकर आया।

चंद्रपुर में शिविर का उद्घाटन करतीं प्रसिद्ध रेडियोलॉजिस्ट डॉ. प्रेरणा कोलत

**उरई, जालौन। उत्तर प्रदेश**

गायत्री शक्तिपीठ उरई ने एक दिवसीय कन्या किशोर कौशल शिविर का आयोजन कर 50 से अधिक बच्चों को सत्प्रेरणाएँ प्रदान कीं। इस शिविर में किशोर मन पर सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव और उसके नकारात्मक एवं सकारात्मक पहलुओं पर प्रमुख रूप से चर्चा हुई। सर्वश्री महेश चंद्र सैनी, अमित प्रताप सिंह, घनश्याम शर्मा, विनोद चौहान, रामसिंह यादव, संतोष श्रीवास्तव ने गायत्री परिवार और उसके द्वारा चलाई जा रही रचनात्मक गतिविधियों का परिचय दिया। बच्चों ने कहा कि ऐसे शिविरों से उनकी मानसिक दक्षता और शारीरिक क्षमताओं को निखारने का अवसर मिलता है।

**छत्तीसगढ़ में नये युवाओं को गढ़ने का सशक्त माध्यम बना आवासीय व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर**

## 13 जिलों के 27 स्थानों में सम्पन्न हुए शिविर

रायपुर जिले में कुशालपुर में आयोजित शिविर में ध्यान साधना कर रहे युवक, युवतियाँ और बच्चे

**रायपुर। छत्तीसगढ़**

प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ छत्तीसगढ़ ने इस वर्ष ग्रीष्मकाल में 13 जिलों के 27 स्थानों पर छः दिवसीय व्यक्तित्व निर्माण आवासीय युवा शिविरों का आयोजन किया। इनमें पूरे प्रदेश के 2638 युवक-युवतियों ने भाग लिया। लगभग 70% युवा गायत्री परिवार के बाहर के होते थे, जो परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से बहुत प्रभावित हुए। उन्हें व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में मानवोचित भूमिका का बोध कराया गया।

सभी शिविरों में कुल मिलाकर 770 युवाओं ने गुरुदीक्षा लेकर आदर्शोन्मुख जीवन जीने और समाज के उत्थान के लिए समर्पित होने के संकल्प लिए। उन्हें मुख्य रूप से बाल संस्कार शाला, नशा मुक्ति आंदोलन, वृक्षारोपण जैसे रचनात्मक आन्दोलन चलाने के लिए प्रेरित किया गया।

इन 27 शिविरों को सम्पन्न करने हेतु प्रदेश में पाँच सदस्यीय 6 टोलियों का गठन किया गया था। डॉ. कुंती साहू, सुश्री रुकमणी बंछोर, सुरेन्द्र गुप्ता, डी.आर. चौहान, चम्पेश्वर साहू, कुलदीप भारती, निखिल चंद्राकर, रोमा साहू, मीना ध्रुव ने इन टोलियों का नेतृत्व किया।

### शानदार उपलब्धियाँ

| | |
|---|---|
| 2638 | युवक-युवतियाँ प्रशिक्षित हुए |
| 770 | ने गुरुदीक्षा ली |
| 284 | युवा मण्डल बने |
| 250 | बाल संस्कारशाला के संकल्प उभरे |
| 647 | युवाओं ने नशा त्यागा |
| 727 | युवाओं ने मांसाहार छोड़ा |

सभी शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र एवं साहित्य प्रदान किया गया। अनेक स्थानों में क्षेत्रीय जन प्रतिनिधियों एवं गणमान्य नागरिकों ने शिविर के उद्घाटन एवं समापन समारोहों में उपस्थित होकर प्रशिक्षणार्थी युवाओं को युग निर्माण की दिशाधारा में अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया।

**प्रशिक्षण के प्रमुख विषय**

कैरियर निर्माण क्यों और कैसे? सफलता के सूत्र, स्वास्थ्य रक्षा के अचूक उपाय, तनाव प्रबंधन, समय प्रबंधन, बुद्धि बढ़ाने की वैज्ञानिक विधि, ब्रह्मचर्य कितना आवश्यक?, संस्कारों का विज्ञान, गायत्री महाविज्ञान, व्यसन से बचाएँ -सृजन में लगायें, पर्यावरण हमारी जिम्मेदारी, स्वावलंबन से स्वाभिमान का जागरण आदि।

**नशामुक्ति की प्रबल प्रेरणा**

शिविर में पावर पॉइंट के माध्यम से व्यसन मुक्ति की कक्षा हुई, डॉक्यूमेण्ट्री फिल्म का प्रदर्शन किया गया। प्रत्येक शिविर में शिविरार्थियों द्वारा व्यसन मुक्ति रैली निकालकर नशेड़ी व्यक्ति के प्रतीक मुर्दे का अंतिम संस्कार भी किया गया। इस बीच सैकड़ों युवाओं ने नशा त्याग करने का संकल्प लिया।

**यहाँ आयोजित हुए शिविर**

गोरेला पैण्ड्रा मरवाही जिले में पेण्ड्रा; धमतरी जिले में नगरी, कुरूद एवं गुजरा; गरियाबंद जिले में गरियाबंद, देवभोग; बलरामपुर में बलरामपुर, राजपुर, वाइफनगर, कुसमी एवं शंकरगढ़; महासमुंद में बागबहरा; रायपुर में कुशालपुर, कांदुल, तिल्दा-नेवरा एवं आरंग; रायगढ़ में पुसौर एवं खरसिया; कांकेर में लोरमी एवं मुंगेली; बिलासपुर में खम्हरिया एवं बेलमुण्डी; कोरबा में कुसमुंडा; सुकुमा में कूकानार एवं दंतेवाड़ा जिले में बारसूर।

## पंजाब, हरियाणा में ज्योति कलश यात्राओं की पृष्ठभूमि बनी

परम वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी एवं अखंड दीपक के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में पूरे देश में ज्योति कलश रथयात्राएँ निकाली जा रही हैं। इन यात्राओं के संदर्भ में विस्तृत जानकारी देने तथा योजनाएँ सुनिश्चित करने के लिए शान्तिकुञ्ज से श्री सुखदेव शास्त्री, श्री जयराम मोटलानी एवं श्री प्रदीप साहू की टोली 20 जून से 30 जून 2024 तक पंजाब और हरियाणा के प्रवास पर थी। टोली ने हरियाणा के यमुना नगर, अम्बाला, कुरुक्षेत्र एवं पंजाब के पटियाला, मंडी गोविंदगढ़, खन्ना, लुधियाना, नवां शहर (शहीद भगत सिंह नगर), कपूरथला, जालंधर, होशियारपुर, नंगल, रोपड़ आदि मुख्य स्थानों में कार्यकर्त्ता गोष्ठियों को संबोधित किया। कार्यकर्त्ताओं को समयदान, अंशदान, पत्रिकाओं की सदस्यता बढ़ाने, घर-घर यज्ञ अभियान तथा रचनात्मक गतिविधियों को गति देने के लिए प्रेरित किया गया।

# शान्तिकुञ्ज की टोली का वियतनाम, सिंगापुर और जापान प्रवास

## भव्य स्वागत, कई सम्मेलन, यज्ञ, दीपयज्ञ और आत्मीयता विस्तार के लिए जनसंपर्क के कई कार्यक्रम हुए

इन दिनों युग चेतना के विश्वव्यापी विस्तार के महान लक्ष्य के साथ भारतीय संस्कृति की पताका को अलग-अलग देशों में फहरा रहे देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी जुलाई के प्रथम सप्ताह में पहले वियतनाम, सिंगापुर और फिर जापान के प्रवास पर थे। वे भारत के एकमात्र प्रतिनिधि थे, जिन्हें जापान में विश्व शान्ति और मानवता के हित में आयोजित ऐतिहासिक विश्व सम्मेलन 'एआई एथिक्स फॉर पीस' में भारत और हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व करने का गौरव प्राप्त हुआ। इससे पूर्व वियतनाम और सिंगापुर में लम्बे समय से मिशन के लिए कार्य कर रहे कार्यकर्त्ताओं को गुरुसत्ता के ज्येष्ठ प्रतिनिधि का सान्निध्य लाभ प्राप्त करने का अभूतपूर्व अवसर मिला। दोनों देशों में आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से मानवता की सेवा कर रहे कई संगठनों और महानुभावों को नई प्रेरणा और नई ऊर्जा प्राप्त हुई।

बायें हनोई में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों का स्वागत करने पहुँचे स्थानीय कार्यकर्त्ता और दायें सिंगापुर के हिन्दू मंदिर में आत्मीयता विस्तार

**वियतनाम**

## हनोई के विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र में व्याख्यान और योग फेडरेशन में हुआ प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन

6 जुलाई को हनोई में वियतनाम के प्रतिष्ठित विवेकानंद सांस्कृतिक केन्द्र में 'लाइफ एज ए ब्लेसिंग' विषय पर आदरणीय डॉ. चिन्मय जी का व्याख्यान हुआ। उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन निश्चित रूप से ईश्वर का सर्वोत्तम वरदान है, लेकिन यह तभी है जब इसकी दिव्यता का अनुभव करते हुए मानवीय क्षमताओं का विकास किया जा सके। यह आध्यात्मिक जीवन के अवलम्बन से ही संभव है।

व्याख्यान में विवेकानंद सांस्कृतिक केन्द्र की निदेशक डॉ. मोनिका शर्मा जी के अलावा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती हो येन, श्री हा वोंग सहित डॉ. गणेश, डॉ. शिवम और कई लब्ध प्रतिष्ठि लोग उपस्थित रहे। परम पूज्य गुरुदेव के दर्शन और विचारों ने सभी को बहुत प्रभावित किया।

योग फेडरेशन, हनोई में

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी विवेकानन्द सांस्कृतिक केन्द्र हनोई में उद्बोधन देते हुए

### योग फेडरेशन, हनोई में

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का एक कार्यक्रम हनोई के योग फेडरेशन द्वारा आयोजित था। इसमें 200 से अधिक लोगों ने भाग लिया। डॉ. चिन्मय जी ने जीवन में सहज उत्थान के लिए गायत्री मंत्र की उपासना करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर डॉ. हू येन, डॉ. कोन, डॉ. वी विशिष्ट गणमान्यों के रूप में उपस्थित रहे। सभी ने विधिवत गायत्री मंत्र की उपासना करने का संकल्प लिया।

## सिंगापुर में विभिन्न समुदायों से नवयुग की संरचना में सहभागी बनने का आह्वान

सिंगापुर में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और शान्तिकुञ्ज से उनके साथ गए श्री राजकुमार वैष्णव, श्री हरिप्रसाद चौधरी तथा श्री जगदीश कुल्मी जी का भावभरा स्वागत हुआ। एअरपोर्ट पर श्री रवि जी, श्री पराग जी, श्री सुथार जी, श्री प्रभात जी, श्री माहेश्वरी जी आदि वरिष्ठ कार्यकर्त्ता टोली के स्वागत के लिए उपस्थित थे।

सिंगापुर के हिन्दू सेंटर में आदरणीय डॉक्टर चिन्मय जी का व्याख्यान हुआ। प्रज्ञागीतों से निर्मित अत्यंत भावभरे वातावरण में सभी को नवयुग की स्थापना में भागीदारी के सौभाग्य का वरण करने की प्रेरणा दी गई।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कई समुदायों के प्रमुखों से चर्चा की। भारतीय संस्कृति को विश्व संस्कृति बनाकर पूरे विश्व में सतयुग की वापसी के लिए संकल्पित परम पूज्य गुरुदेव के विचार, उनका प्रभाव और योजनाओं को साझा किया। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भारतीय संस्कृति के व्यापक विस्तार के लिए सभी समुदायों से मिलकर कार्य करने का आह्वान किया।

केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने वहाँ सक्रिय गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं से व्यक्तिगत संपर्क किया, जन्मशताब्दी वर्ष-2026 को लक्ष्य कर सक्रियता के लिए मार्गदर्शन दिया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी सिंगापुर के हिन्दू मंदिर में उद्बोधन देते हुए

## जापान के टोक्यो, कोफू और योकोहामा में गायत्री यज्ञ एवं दीपयज्ञ

पूरे विश्व में आध्यात्मिक, सामाजिक और नैतिक क्रान्ति का शंखनाद कर रहे अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 8 जुलाई को ही जापान पहुँच गए थे। उस दिन उन्होंने राजधानी टोक्यो में रह रहे गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं और भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाले परिजनों को परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी का दिव्य संदेश दिया। उन्होंने टोक्यो एवं कोफू शहर में दीपयज्ञ संपन्न कराए। योकोहामा में गायत्री यज्ञ का आयोजन रखा गया था, जिसे उन्होंने पूरे विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराते हुए याजकों को भारतीय संस्कृति के उदात्त चिंतन और उत्कृष्ट परम्पराओं से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि हमारी देव संस्कृति में सारी मानवता का कल्याण निहित है। बड़ी संख्या में प्रवासी भारतीय इस पुनीत आयोजन का हिस्सा बने।

## शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि को मिला विवेकानन्द अंतर्राष्ट्रीय संबंध शान्ति पुरस्कार

**मुम्बई। महाराष्ट्र**

मुंबई के प्रतिष्ठित होटल ताज में दिनांक 5 जुलाई को आयोजित एक विशेष समारोह में अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रतिनिधि, युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को विवेकानंद अंतर्राष्ट्रीय संबंध (वीआईआर) शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। समारोह में उपस्थित अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त विशिष्ट विभूतियों को यह सम्मान भारत को विविध क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित करने वाली उपलब्धियों के लिए प्रदान किया गया है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को शिक्षा, जनकल्याण एवं विश्व शान्ति के लिए किए गए विशिष्ट कार्यों के लिए स्मृति चिह्न व सम्मान पत्र प्रदान किया गया।

### गुरुसत्ता को समर्पित किया सम्मान

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस सम्मान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए इसे अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी एवं माता भगवती देवी शर्मा जी को समर्पित किया। उन्होंने कहा कि पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी, जिन्होंने विश्व भर में भारतीय संस्कृति के नवोन्मेष, सांस्कृतिक उत्थान एवं युवाओं के जागरण हेतु अखिल विश्व गायत्री परिवार की न केवल स्थापना की, वरन आज भी अपना संरक्षण एवं मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं, उन्हीं की प्रेरणा और आशीर्वाद से सेवाकार्य संभव हो रहे हैं। उनके उदात्त आदर्शों की बुनियाद पर आज पूरी दुनिया गायत्री परिवार की ओर आशा भरी दृष्टि से देख रही है।

### राज्यपाल, मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री उपस्थित रहे

यह समारोह तर्पण फाउण्डेशन द्वारा आयोजित किया गया था, जो युवा सशक्तीकरण एवं उत्थान के लिए कार्यरत है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के साथ-साथ सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री रतन टाटा, आचार्य डॉ. लोकेश मुनि जी, सदगुरु डॉ. गौरांग दास, श्री सुभाष कपूर एवं डॉ. कृष्णा एला जी को भी वी.आई.आर. पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस विशेष अवसर पर महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल श्री रमेश बैस, माननीय मुख्यमंत्री श्री एकनाथ शिंदे और माननीय उपमुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फडनवीस प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

**वीआईआर शान्ति पुरस्कार से सम्मानित विशिष्ट विभूतियाँ**

## मुख्यमंत्री आवास पर गायत्री यज्ञ

### शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि पुरोहित थे और उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी थे यजमान

**देहरादून। उत्तराखण्ड**

उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री माननीय श्री पुष्कर सिंह धामी जी ने दिनांक 02 जुलाई 2024 को अपने आवास पर गायत्री यज्ञ का आयोजन किया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने स्वयं पहुँच कर यह यज्ञ सम्पन्न कराया। उन्होंने कर्मकाण्ड कराने के साथ यज्ञीय जीवन दर्शन को जनजीवन में प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता और योजनाओं की चर्चा की।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि युगदृष्टा, युगस्रष्टा युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने गायत्री और यज्ञ को पूरे विश्व में घर-घर प्रतिष्ठित कर वस्तुतः जन-जन के मन में सद्विचार एवं सद्भावों को पोषित करने का अभियान चलाया है। देवभूमि उत्तराखण्ड के सनातन गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए, विश्व में शान्ति और मानवता के उत्थान के लिए हम सबको इस अभियान को तीव्र गति देने की आवश्यकता है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी यज्ञ कराते हुए और श्री धामी जी को पौधा भेंट करते हुए

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री जी को स्मृति चिह्न तथा परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित दिव्य साहित्य भेंट किया।

**सम्मान सबका करो, किन्तु विश्वास केवल उनका करो जो प्रामाणिकता की कसौटी पर अनेक बार परखे जा चुके हैं।**

हिरोशिमा, जापान में हुआ विश्व सम्मेलन

# एआई एथिक्स फॉर पीस

## वर्ल्ड रिलीजियस कमिट टु द रोम कॉल

**विश्व के प्रमुख 11 धर्म, माइक्रोसॉफ्ट, आईबीएम, सिस्को जैसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थान के अग्रणी प्रतिनिधियों ने मानवीय हितों की रक्षा के लिए, विश्व में शान्ति और सद्भाव बनाये रखने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के क्षेत्र में नैतिकता बरतने की प्रतिबद्धता के दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए**

**शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने किया भारत और हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व**

विश्व सम्मेलन में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, दायें सम्मेलन को संबोधित करते हुए और हिरोशिमा अपील पर हस्ताक्षर करते हुए

हिरोशिमा पीस मेमोरियल पार्क में पहुँचे सम्मेलन के प्रमुख गणमान्य

**हिरोशिमा। जापान**

सन् 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध के समय जापान के हिरोशिमा और नागासाकी शहरों पर परमाणु बम गिराए गए। इस अमानवीय कृत्य ने 1,20,000 लोगों की जान ले ली। इस क्रूरता को इतिहास कभी भूलेगा नहीं। प्रसन्नता की बात है कि इसी हिरोशिमा शहर में 9 और 10 जुलाई 2024 की तिथियों में मानवता के हितों की रक्षा करने के लिए एक विश्व सम्मेलन हुआ 'वर्ल्ड रिलीजियस कमिट टु द रोम कॉल'।

यह सम्मेलन जापान के प्रधानमंत्री महामहिम फुमिओ किशिदा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसमें मानवीय हितों की रक्षा के लिए, विश्व में शान्ति और सद्भाव बनाये रखने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के क्षेत्र में नैतिकता का पूरा-पूरा ध्यान रखने का आह्वान किया गया। बौद्ध, हिन्दू, पारसी, बहाई, ईसाई, यहूदी, मुस्लिम आदि विश्व के 11 प्रमुख धर्मों और विश्व में आईटी क्षेत्र की अग्रणी कम्पनियों के शीर्ष प्रतिनिधियों सहित सभी महानुभावों ने 'कमिट टु द रोम कॉल फॉर एआई एथिक्स' पर हस्ताक्षर किए।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के लिए गौरव की बात है कि भारत और सनातन हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व करने का अवसर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को मिला। उन्होंने अपने संदेश में विश्व मानवता के कल्याण और विश्व शान्ति-सद्भाव के संदर्भ में परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से पूरे विश्व से उपस्थित लगभग 150 प्रतिष्ठित गणमान्यों को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचार भटकी मानवता को दिशा देने और विश्व की अधिकांश समस्याओं का समाधान करने में समर्थ हैं।

**विश्व के गणमान्यों की भागीदारी**

हिन्दू (सनातन) धर्म के एकमात्र प्रतिनिधि माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के अलावा जापान के आरओपी के अध्यक्ष माननीय योशिहारू टोमात्सु, पोटेंशिअल अकादमी ऑफ लाइफ के अध्यक्ष महामहिम आर्कबिशप पगलिया, अबू धाबी फोरम फॉर पीस के अध्यक्ष महामहिम शेख अब्दुल्ला बिन बय्याह, माइक्रोसॉफ्ट के अध्यक्ष ब्रैड स्मिथ, आईबीएम के उपाध्यक्ष डेरियो गिल, सिस्को के प्रतिनिधि सहित विश्व की गणमान्य हस्तियों ने तकनीकी क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग में नैतिकता अपनाने और मानवता के हितों की रक्षा करने की प्रतिबद्धता के लिए हस्ताक्षर किए हैं। ये सभी महानुभाव और संस्थाएँ इस संदर्भ में परस्पर विचार विमर्श और मार्गदर्शन करती रहेंगी।

**हिरोशिमा अपील**

10 जुलाई को सभी प्रमुख संस्थाओं ने 'हिरोशिमा अपील' नामक दस्तावेज प्रस्तुत किया। इसमें मानवता और पूरी विश्व मानवता के एकमात्र आधार-इस धरती की भलाई के लिए एआई का उपयोग करने की आवश्यकता को दोहराया गया। इसमें अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से सभी सशस्त्र संघर्षों की तत्काल समाप्ति के लिए शान्तिपूर्ण तरीकों का उपयोग करने का आग्रह भी किया गया।

यह कार्यक्रम हिरोशिमा पीस मेमोरियल पार्क में आयोजित था। जापान के संचार मंत्री माननीय श्री तारो कोनो और देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रतिनिधि माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के अलावा 12 धर्मों के प्रमुखों ने इस ऐतिहासिक दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए।

**दिवंगतों को श्रद्धाञ्जलि**

हिरोशिमा शहर में द्वितीय विश्वयुद्ध के समय परमाणु बम त्रासदी में दिवंगत हुई आत्माओं को पुष्पांजलि अर्पित करने का एवं शान्तिपाठ का कार्यक्रम रखा गया था। विश्व के चुने हुए महानुभावों के साथ माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भी अखिल विश्व गायत्री परिवार एवं भारतवासियों की ओर से श्रद्धाञ्जलि दी।

हिरोशिमा की परमाणु बम त्रासदी में दिवंगत हुए लोगों को श्रद्धांजलि

**प.पू. गुरुदेव के विचार हैं समाधान**

उल्लेखनीय है कि हिरोशिमा में हुए परमाणु बम विस्फोट में 1,20,000 से अधिक लोगों की मृत्यु हुई थी। लगभग आधे लोग तो उसी दिन मारे गए थे। उसके तीन दिन बाद नागासाकी में परमाणु बम गिराया गया, जिसमें 70 से 80 हजार लोग मारे गए। इस अवसर पर भी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि ऐसी दुर्दांत विभीषिकाओं से बचने के लिए परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचारों को सारे विश्व में फैलाने की आवश्यकता है।

# शान्तिकुञ्ज में डॉ. चिन्मय जी का अभिनंदन

माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी श्रद्धेया जीजी से आशीर्वाद लेते हुए और कार्यकर्त्ताओं का अभिनंदन स्वीकार करते हुए

हिरोशिमा, जापान में हुए ऐतिहासिक विश्व सम्मेलन में भाग लेने के साथ-साथ वियतनाम और सिंगापुर में नवचेतना का संचार कर लौटे देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का शान्तिकुञ्ज परिवार ने अत्यंत भावभरा स्वागत किया। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया शैल जीजी ने उनका मंगल तिलक कर पुष्पहार पहनाया। शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक आदरणीय श्री महेन्द्र शर्मा जी, पूर्व व्यवस्थापक श्री शिवप्रसाद मिश्रा जी, श्री हरीश ठक्कर जी तथा शान्तिकुञ्ज के लगभग सभी विभाग प्रमुखों ने उन्हें पुष्पों की माला पहनाकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त की, शुभकामनाएँ दीं।

**एक ऐतिहासिक उपलब्धि**

इस अवसर पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपने हृदय के उद्गार व्यक्त किए। उन्होंने सहज स्वभाव के साथ कहा कि गर्व तो इस बात पर होता है कि उन मंचों पर परम पूज्य गुरुदेव और गायत्री परिवार की बात पहुँच रही है, जिन मंचों पर भारतीय प्रतिनिधित्व दुर्लभ हुआ करता था। हिरोशिमा, जहाँ बम गिरने के बाद से अब तक कोई बड़ा कार्यक्रम हुआ ही नहीं, उस स्थान पर परम पूज्य गुरुदेव की आवाज गूँजना एक ऐतिहासिक घटना है। यूनाइटेड नेशन के चार्टर में परम पूज्य गुरुदेव का नाम आना बहुत बड़ी उपलब्धि है। हिन्दू धर्म के प्रतिनिधित्व के लिए गायत्री परिवार को चुना जाना गौरव की बात है।

**अनुभूतियाँ**

सन् 1945 में जिस स्थान पर बम गिरा था, उस स्थान पर खड़े होने मात्र से रोमांच हो जाता है। हम वहाँ म्यूजियम में गए तो यह सोचकर आँखों से आँसू आ गए कि कैसे 1,20,000 लोग जल-जल कर मरे होंगे। उस समय वहाँ पानी सूख गया था, आसपास की आठ नदियाँ सूख गई थीं।

**हर कार्यकर्त्ता का सम्मान है**

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि यह सम्मान परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी का ही आशीर्वाद है। यह मेरे अकेले की नहीं, अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रत्येक कार्यकर्त्ता की उपलब्धि है, जो मिशन के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं। मेरा सौभाग्य है कि मुझे इसका निमित्त बनने का अवसर मिला।

**जापानियों के साहस को सराहा**

लोगों ने भविष्यवाणी की थी कि आने वाले हजारों वर्षों में हिरोशिमा में कोई परिंदा पर नहीं मारेगा, लेकिन जापानियों का साहस देखने योग्य है। उन्होंने आज वहाँ 10 लाख लोगों की आबादी वाला शहर बसा दिया है। उस स्थान को देखकर लगता ही नहीं कि कभी यहाँ परमाणु बम गिरा होगा।

# शान्तिकुञ्ज में मनाया 411वाँ वृक्षारोपण सप्ताह

## अब तक लगा चुके हैं 41000 वृक्षों की पौध

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया शैल जीजी के आशीर्वाद और आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी के मार्गदर्शन में विगत 8 वर्षों से सतत साप्ताहिक वृक्षारोपण कर रहे गायत्री परिवार यूथ ग्रुप वडोदरा ने अपना 411वाँ वृक्षारोपण सप्ताह अपने पावन गुरुद्वारे, शान्तिकुञ्ज में आकर मनाया। 7 जुलाई 2024 के दिन इस विशेष उपलक्ष्य में जीपीवायजी वडोदरा के प्रमुख सदस्य हेतुका बहिन, एकता, श्वेता, योगिता बहिन, विक्रम भाई, विनायक भाई, लखन भाई, कश्मीरा सोलंकी ने युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज के प्रभारी श्री के.पी. दुबे तथा उद्यान विभाग प्रभारी श्री सुधीर भारद्वाज की मुख्य उपस्थिति में पौधे का पूजन और रोपण किया।

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप वडोदरा टीम ने यह अभियान 5 जून 2016 में मात्र तीन कार्यकर्त्ताओं के साथ आरंभ किया था। आज सैकड़ों कार्यकर्त्ता इस अभियान से जुड़े हैं। वे

अब तक 41000 से अधिक वृक्षों की पौध लगा चुके हैं। ये वृक्ष आर्मी, नेवी, एयरफोर्स, रेलवे, गवर्नमेंट सेक्टर की भूमि पर, सोसाइटी के कॉमन प्लॉट में, गाँवों में, किसानों के खेतों जैसी अनेक जगहों पर लगाए गए हैं।

श्रद्धेय डॉक्टर साहब एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने ग्रुप के महान कार्यों का अभिनंदन किया। श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने कहा कि वृक्ष प्रकृति का परिधान है, जलदाता-जीवनदाता है। हम सभी को प्रकृति के साथ एकात्मता के संकल्प को पूरी दृढ़ता के साथ निभाना है।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
**संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

**सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ**
**फोन : 01334-311004**
**ईमेल :** pragyaabhiyan@awgp.in
**समाचार भेजने के लिए**
**ई-मेल** : news@awgp.org

**Publication date: 27.07.2024**
**Place: Shantikunj, Haridwar**
**RNI-NO.38653/ 1980**
**Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26**
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26